खंड

2

अनुवाद प्रक्रिया-2

इकाई 4
अनुवाद पुनरीक्षण (Vetting of Translation) 71

इकाई 5
अनुवाद मूल्यांकन (Evaluation of Translation) 88

इकाई 6
अनुवाद समीक्षा (Criticism of Translation) 99

खंड परिचय 2

अनुवाद अध्ययन में एम.ए. कार्यक्रम के ग्यारहवें पाठ्यक्रम का यह दूसरा खंड है। प्रथम खंड में आपने **अनुवाद प्रक्रिया-1** के अंतर्गत अनुवाद की प्रक्रिया, अनुवाद के प्रकार तथा अनुवाद की सीमाओं और अननुवाद्यता पर विस्तार से अध्ययन किया। अनुवाद प्रक्रिया से गुजर कर जब अनुवाद एक उत्पाद के रूप में उपलब्ध हो जाता है तो उसकी संप्रेषणीयता एवं मानकता के अतिरिक्त अनुवाद में अनावश्यक विस्तार तथा कमियों आदि की पहचान और सुधार कर उनके समाधान पर बल दिया जाता है। यह पक्ष साहित्यिक तथा साहित्येतर दोनों ही अनुवाद प्रकारों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। इन्हीं सब बिंदुओं पर आप **'अनुवाद प्रक्रिया-2'** नामक इस खंड में अध्ययन करेंगे। इस खंड में तीन इकाइयाँ हैं जिनमें क्रमशः अनुवाद पुनरीक्षण, अनुवाद मूल्यांकन तथा अनुवाद समीक्षा पर चर्चा की गई है।

इकाई 4 'अनुवाद पुनरीक्षण' : इस इकाई में शिक्षार्थी पुनरीक्षण का अर्थ-अभिप्राय, आवश्यकता तथा पुनरीक्षण के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ अभ्यास पुनरीक्षण द्वारा स्रोतपाठ एवं अनूदित पाठ के बीच स्थापित होने वाले अंतरसंबंध को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान कर सकेंगे। इस अभ्यास से वे अनुवाद में होने वाली सामान्य भूलों से बच भी सकेंगे। पुनरीक्षण, मूल्यांकन तथा समीक्षा के बीच सूक्ष्म अंतर भी स्पष्ट होगा। पुनरीक्षण का दायित्व कौन निभा सकता है तथा अनुवाद में होने वाली गलतियों की पहचान कैसे की जा सकती है, शिक्षार्थी इस इकाई के अध्ययन के उपरांत यह भी जान सकेंगे।

इकाई 5 'अनुवाद मूल्यांकन' : अनुवाद प्रक्रिया नामक पाठ्यक्रम के खंड 2 की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में हमने अनुवाद मूल्यांकन पर चर्चा की है। अनुवाद मूल्यांकन पर अध्ययन करते हुए आप पाएंगे कि अनूदित कृति का जब सार्थकता, उपयोगिता, उपादेयता, प्रामाणिकता तथा प्रयुक्तिपरक औचित्य आदि की दृष्टि से परीक्षण किया जाता है तो यह प्रक्रिया अनुवाद मूल्यांकन कहलाती है। यह अनेक आयामों में समीक्षा से भिन्न परीक्षण है। चर्चा में आप जान पाएँगे कि अनुवाद मूल्यांकन की एक सुस्थापित परंपरा है और इसकी वैज्ञानिक प्रविधियाँ हैं जो अनुवाद को मानक और गुणात्मक बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इकाई 6 'अनुवाद समीक्षा' : पिछली दो इकाइयों के तारतम्य में यह तीसरी इकाई है। अनुवाद को जब एक उत्पाद के रूप में पाठको के समक्ष प्रस्तुत कर दिया जाता है तो उसको गुण-दोषों के आधार पर परखना आवश्यक होता है। इससे अनुवाद भाषिक, सामाजिक और सामाजिक मूल्यों के प्रति कितना ईमानदार रहा है; यह देखा जा सकता। इस इकाई में आप पाएँगे कि अनुवाद समीक्षा, अनुवाद पुनरीक्षण तथा अनुवाद मूल्यांकन से कई मायनों में भिन्न है तथा साहित्यिक और साहित्येतर समीक्षा एक महत्वपूर्ण अनुवाद उपागम है। अनुवाद समीक्षा, एक प्रकार की त्रुटि-सुधार प्रक्रिया है और इस प्रकार यह एक शिक्षणात्मक उपागम बन जाता है। अस्तु इस चरण की संपन्नता के साथ ही अनुवाद की गुणात्मकता भी सिद्ध हो जाती है। अनुवाद समीक्षा के भी कुछ निश्चित सिद्धांत और चरण हैं, जिनका अनुपालन अनुवाद समीक्षा में किया जाता है। अनुवाद समीक्षा में भी मूल्यांकन पठनीयता, संप्रेषणीयता, बोधगम्यता तथा सोदेश्यता और प्रयोजनासिद्धि जैसे बिंदुओं के आधार पर कृति की जाँच-परख की जाती है। वास्तव में एक अच्छे अनुवादक को अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों की जानकारी अपेक्षित होती है। भले ही प्रत्येक अनुवादक को मूल्यांकक अथवा समीक्षक होना अनिवार्य न हो तथापि यह वांछित होता है कि प्रत्येक अनुवादक इन प्रविधियों एवं इनके विभिन्न गुणात्मक अभिकरणों से भलीभाँति परिचित हो ताकि गुणात्मक अनुवाद के मूल्यों का रक्षण हो सके।

इकाई 4 अनुवाद पुनरीक्षण (Vetting of Translation)

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 पुनरीक्षण का अर्थ

4.3 पुनरीक्षण संबंधी विभिन्न संकल्पनाएँ

4.4 पुनरीक्षण के स्तर

4.4.1 भाषायी संशोधन

4.4.2 संकल्पनात्मक संशोधन

4.5 पुनरीक्षणकर्ता कौन

4.6 पुनरीक्षण और मूल्यांकन में अंतर

4.6.1 अनुवाद पुनरीक्षण

4.6.2 अनुवाद मूल्यांकन

4.7 पुनरीक्षण प्रक्रिया के विभिन्न चरण

4.8 पुनरीक्षक के लिए अपेक्षित गुण

4.9 पुनरीक्षण के दस व्यावहारिक सूत्र

4.10 पुनरीक्षण का अभ्यास

4.11 सारांश

4.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

4.13 शब्दावली

4.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बता सकेंगे कि पुनरीक्षण किसे कहते हैं और इसे कौन करता है;
- पुनरीक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- पुनरीक्षण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कर सकेंगे; और
- अनूदित सामग्री के पुनरीक्षण का प्रयास कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइयों में आपको अनुवाद की प्रक्रिया एवं पद्धति, अनुवाद के प्रकार, अनुवाद की सीमाओं आदि की जानकारी दी गई है। इससे पूर्व आपने अनुवाद के सिद्धांतों, परंपराओं, भाषाविज्ञान तथा अनुवाद के क्षेत्रों तथा भाषा संप्रेषण आदि पर विस्तृत अध्ययन कर लिया है। इस इकाई में आपको अनुवाद पुनरीक्षण के संबंध में जानकारी दी जाएगी। पुनरीक्षण के बारे में भी आपने सुना अथवा पढ़ा अवश्य होगा। यह अनुवाद की संपूर्णता की ओर बढ़ने में एक महत्वपूर्ण चरण है। यहाँ हम जानेंगे कि पुनरीक्षण का क्या अभिप्राय है, इसका कर्ता कौन

तथा किन-किन गुणों से संपन्न होता है और सबसे महत्वपूर्ण यह कि पुनरीक्षण के विभिन्न कौन-कौन से प्रकार तथा स्तर एवं चरण होते हैं। अनुवाद पुनरीक्षण और मूल्यांकन के अलग-अलग होने संबंधी मानकता के आधार भी आप जानेंगे। अनुवाद पुनरीक्षण की सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त करने और पाठ के अंत में दिए गए नमूनों का स्वयं व्यावहारिक पुनरीक्षण करने के बाद पुनरीक्षण की प्रक्रिया को अधिक स्पष्टता से जान पाएंगे तथा पुनरीक्षण को अनुवाद प्रक्रिया के साथ बेहतर तरीके से जोड़कर देख सकेंगे।

4.2 पुनरीक्षण का अर्थ

पुनरीक्षण शब्द=पुनः+ईक्षण से निर्मित समस्त पद है जिसका अर्थ है फिर से देखना, किंतु हिंदी में अब इस शब्द का प्रयोग 'अनुवाद के संशोधन' के लिए किया जाता है। अभिप्राय यह है कि कोई व्यक्ति अनुवाद करके अपने अनुवाद को एक बार देख चुका है। दूसरा व्यक्ति अर्थात् पुनरीक्षक (vetter) उसको फिर से देखता है अर्थात् अनुवाद का पुनःईक्षण (देखना) करता है, यही पुनरीक्षण (Vetting) है। अनुवाद एक भाषा में अभिव्यक्त भावों, विचारों, एवं अनूभूतियों का दूसरी भाषा में सन्निकट अभिव्यक्ति के रूप में सजीव प्रस्तुतीकरण है। इस प्रस्तुतीकरण में मूल अर्थ, भाव और संवेदनाओं का अक्षुण्ण रहना और लक्ष्यभाषा में उसकी पुनरभिव्यक्ति होना ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। पुनरीक्षण की आवश्यकता (इसलिए भी है कि) पुनरीक्षण अनुवाद प्रक्रिया का व्यावहारिक दृष्टि से अगला एवं अंतिम चरण है अर्थात् अनुवाद कार्य के तीनों चरण-विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन (नाइडा द्वारा प्रस्तावित) संपन्न हो जाने के बाद उसे परिशुद्ध करने का काम अपेक्षित होता है, इसीलिए अनुवाद कार्य का संशोधन करने के लिए पुनरीक्षण किया जाता है। पुनरीक्षण करते समय मूल रूप से यह देखा जाता है कि स्रोतभाषा के पाठ के कथ्य और शैली की अनुवाद में रक्षा हुई है अथवा नहीं। इस दृष्टि से पुनरीक्षण कार्य अत्यंत श्रमसाध्य कार्य है जो कई बार तो अनुवाद से भी अधिक गंभीर बन जाता है। पुनरीक्षण तथा समीक्षा काफी समानार्थी होने से कई बार भ्रम उत्पन्न कर देते हैं तथापि अनुवाद के संदर्भ में पुनरीक्षण (Vetting) महत्वपूर्ण पारिभाषिक अभिव्यक्ति है क्योंकि प्रकार्यात्मक अथवा पारिभाषिक शब्दावली के उपयोग वाले अनुवाद क्षेत्रों, यथा-वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रषासनिक, विधिक एवं अन्य सूचना प्रधान साहित्य आदि में पुनरीक्षण की स्पष्ट गुंजाइश रहती है, जबकि समीक्षा स्वप्रेरणा और 'स्वान्त सुखाय' भावना से उत्पन्न सर्जनात्मक साहित्य के प्रकाशित होने के बाद उसकी गुणदोष परीक्षा की गतिविधि है।

4.3 पुनरीक्षण संबंधी विभिन्न संकल्पनाएँ

प्रायः ऐसा माना जाता है कि अनुवादक और पुनरीक्षक एक ही व्यक्ति न होकर और एक-सी सृजनात्मक प्रतिभा और भाषिक क्षमता के व्यक्ति न होकर एक-दूसरे के पूरक होने चाहिए। इस संबंध में मुख्य रूप से तीन बातें कही जा सकती हैं :

1. अनूदित पाठ की भाषा मानक होनी चाहिए। यदि किसी ब्रजभाषी अथवा अवधी भाषी ने हिंदी में कोई अनुवाद किया है तो पुनरीक्षक खड़ी/बोली भाषी होना चाहिए, क्योंकि अपनी बोली के दबाव से अनुवाद में कहीं-कहीं ऐसे क्षेत्रीय अथवा अमानकता की ऐसी गंध आ जाने की संभावना हो सकती है, जिनकी ओर ब्रजभाषी अथवा अवधी भाषी की तुलना में ब्रजेतर बोली भाषी का ध्यान जाना अधिक स्वाभाविक है। अर्थात् सम-बोली-भाषी पुनरीक्षक की तुलना में अन्य बोली-भाषी की दृष्टि के ऐसे प्रयोगों पर जाने की संभावना अधिक होती है। भाषाओं के भी संबंध में यही बात है। यदि किसी बांग्ला-भाषी ने अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया हो तो उसका पुनरीक्षक बांग्ला-भाषी न होकर कोई अन्य भाषा-भाषी हो। निष्कर्षतः पुनरीक्षक यदि अनुवादक की बोली या भाषा बोलने वाला न होकर किसी अन्य बोली या भाषा का भाषी हो तो अपना काम अधिक वस्तुनिष्ठता से कर सकेगा।
2. ज्ञान प्रधान साहित्य का अनुवाद सहयोग से हो तभी अधिक अच्छा होता है। यदि अनुवादक विषय विशेष का विशेषज्ञ है तो पुनरीक्षक भाषा विशेषज्ञ होना चाहिए। उसे सभी विषयों का आवश्यक ज्ञान होना चाहिए। अर्थात् अनुवादक की विषय में अच्छी गति हो और पुनरीक्षक की विषय में गति के साथ-साथ,

स्रोत और लक्ष्यभाषा में भी अच्छी गति हो। इस तरह ज्ञान की दृष्टि से अनुवादक और पुनरीक्षक को एक-दूसरे का पूरक होना चाहिए। दोनों ही भाषाओं के मात्र जानकार होने पर तो काम नहीं चलेगा या मात्र विषय के जानकार हों तब भी अनुवाद अच्छे स्तर का नहीं हो सकेगा।

3. सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक और पुनरीक्षक का एक जैसा न होना अपेक्षित है। एक स्वयं साहित्य का सर्जक हो और दूसरा साहित्य-सर्जक न होकर अच्छा अनुवादक हो तो दोनों एक दूसरे को परस्पर सहयोग कर लेते हैं। जो व्यक्ति सर्जक है, वह अपनी प्रतिभा के दबाव में अधिक छूट लेने की गलती प्रायः कर बैठता है, जिस पर असर्जक किंतु अच्छा अनुवादक अंकुश लगा सकता है। इस प्रकार जिस अनुवादक में सृजन प्रतिभा नहीं है, वह सृजनात्मक साहित्य का अच्छा सृजनात्मक अनुवाद नहीं कर सकता। आदर्श स्थिति यही होती है कि कोई सृजन प्रतिभा का धनी अनुवाद करे तथा कोई असर्जक किंतु अच्छा अनुवादक उसका पुनरीक्षण करे। वस्तुतः अनुवाद में ऐसी व्यवस्था अधिक व्यावहारिक प्रतीत होती है।

4.4 पुनरीक्षण के स्तर

अनुवाद में संबद्ध विषय और भाषिक अभिव्यक्ति दोनों का समान महत्व है। अतः अनुवाद का पुनरीक्षण विषय और अभिव्यक्ति दोनों ही दृष्टियों से किया जाना चाहिए। अपेक्षित होने पर दो पुनरीक्षक भी अच्छे रहते हैं-एक विषय का जानकार और एक भाषा का जानकार। ऐसी स्थिति में अनूदित पाठ विषय और अभिव्यक्ति दोनों ही दृष्टियों से उत्कृष्ट कोटि का बन जाता है। पुनरीक्षण करते समय किए जाने वाले संशोधन को दो भागों में बाँटा जा सकता है :

1. भाषायी संशोधन (Lingual Intervention)
2. संकल्पनात्मक संशोधन (Conceptual Intervention)

यदि इन दोनों प्रकार के संशोधन करने की जरूरत न हो तो मोटे तौर पर पुनरीक्षक को चाहिए कि वह अनुवाद के साथ छेड़छाड़ न करें और अनुवादक को पूरी स्वतंत्रता दें कि वह मुख्य रूप से भाषायी और संकल्पनात्मक अभिव्यक्ति दे सके। तथापि, इन दोनों पर आगे अलग से भी विचार करना समीचीन होगा-

4.4.1 भाषायी संशोधन (Lingual Intervention)

वस्तुतः अनुवाद में भाषायी संशोधन की आवश्यकता अधिक नहीं पड़नी चाहिए क्योंकि अनुवादक का शैक्षिक स्तर प्रायः इतना उच्चस्तरीय होना अपेक्षित है कि इस प्रकार के संशोधनों की अधिक गुंजाइश ही न बचे। परंतु विचार की गति इतनी तीव्र होती है कि उन्हें अभिव्यक्त करते समय लेखनी उनका अनुसरण नहीं कर पाती। अतः भाषायी त्रुटियाँ या चूक हो जाने की संभावना बनी रहती है। उल्लेखनीय है कि यद्यपि भाषायी संशोधन सतही होते हैं लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि भाषा ही विचारों की वाहिनी है और यदि विचारों की वाहिनी के रूप में प्रयुक्त भाषा में शब्दों का सही चयन, सही शब्द छाया का प्रयोग, वाक्य-विन्यास का सही क्रम और सुगठित वाक्य-प्रयोग पुनरीक्षक द्वारा किया जाता है तो निश्चय ही विचार सही तौर पर व्यक्त हो पाएगा और संप्रेषण भी 'पूर्णता' (Perfection) के निकट होगा। वस्तुतः भाषायी संशोधन करते समय पुनरीक्षक वही काम कर रहा होता है जो कार्य आधुनिक सभ्यता में ब्यूटीशियन करते हैं। उनका कार्य दोषों का परिहार, त्रुटियों को छुपाना या आवृत्त करना तथा सुदंर सुगठित रूप प्रस्तुत करना है। यही कार्य भाषायी संशोधन करते समय पुनरीक्षक कर रहा होता है। अतः भाषायी संशोधन गौण होते हुए भी अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक होते हैं।

स्मरण रहे कि अनुवाद और पुनरीक्षण के क्षेत्र में शब्दों का चयन और प्रयोग पांडित्य-प्रदर्शन के लिए कदापि नहीं होना चाहिए। कभी-कभी पुनरीक्षक अनुवादकों द्वारा प्रयुक्त शब्दावली में मात्र पांडित्य-प्रदर्शन के लिए संशोधन कर देते हैं। इस प्रवृत्ति से बचना पुनरीक्षक के लिए बेहद जरूरी है। देखा गया है कि 'आवश्यक' को काट कर 'जरूरी' और 'जरूरी' को काटकर 'आवश्यक', 'अंततः' को काटकर 'अंत में' या 'अंततोगत्वा' कर दिया गया है। अनुवाद के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और तटस्थ रहना पुनरीक्षक का पहला कर्त्तव्य है अन्यथा वह अनुवाद और अनुवादक दोनों के प्रति न्याय नहीं कर पाएगा।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भाषा का स्वरूप निरंतर बदलता और निखरता रहता है क्योंकि भाषा स्वयं एक अनवरत प्रवाह है। अतः पुराने पड़ गए शब्द जैसे 'एतदर्थ', इसके निमित, 'हेतु' जैसे शब्द आज के संदर्भ में और अनुवाद के क्षेत्र में प्रयोग करने से एक ओर भाषा बोझिल हो जाती है, दूसरी ओर आधुनिक भाषा-प्रवाह तथा आम शिक्षित वर्ग से भी दूर होकर कृत्रिम-सी लगने लगती है। ऐसा करके हम उसे 'पुरातन' रूप में पुरातन परिधान को ही प्रस्तुत कर रहे होंगे जो आज के लेखक, पाठक, श्रोता और उपभोक्ता को कदाचित ग्राह्य नहीं है। हाँ, यदि प्रवाह में ऐसे शब्द स्वतः आ जाएँ तो अनुचित नहीं है। स्मरण रहे कि अनुवाद और पुनरीक्षण दोनों ही उच्च कोटि की मानसिक प्रक्रियाएँ है जिनमें अनुवादक समय-सीमा में बँधकर अपनी क्षमता को साकार कर रहा होता है। अतः अनुवादक के प्रति सौहार्द और अनुवाद के प्रति तटस्थता रखना पुनरीक्षक के लिए परम आवश्यक है।

यहाँ भाषायी संशोधनों के संबंध में जिन बातों का उल्लेख किया गया है उनके परिप्रेक्ष्य में सुविधा की दृष्टि से पुनरीक्षण कार्य के निम्नलिखित संक्षिप्त नियम निर्धारित किए जा सकते हैं :

1. व्याकरण-सम्मत शब्द प्रयोग और वाक्य-विन्यास सुनिश्चित करना।
2. वाक्य-विन्यास में वाक्य सौष्ठव, उपवाक्य-वाक्यांशों का क्रम बैठाना।
3. अवतरण संरचना और समग्र अध्याय और अध्यायों का उपयुक्त अनुक्रमण।
4. क्लिष्ट शब्द प्रयोग का परिहार और अन्य सहभाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग जिससे वाक्य बोझिल और अनुवाद दुर्बोध ओर दुर्गम न होने पाए।
5. सहजता और स्पष्टता (Smoothness and Lucidity)।
6. भाषा-सौष्ठव एवं सज्जा।
7. विषय के साथ भाषा का अनुकूलन, विषय-सम्मत शब्द प्रयोग और चयन जो भाव-प्रवणता और विचार-प्रवाह दे सके।
8. सुनिश्चित करना कि कोई स्थल छूट न गया हो।

4.4.2 संकल्पनात्मक संशोधन (Conceptual Intervention)

किसी अनूदित सामग्री में संकल्पनात्मक संशोधन करने से पहले पुनरीक्षक के लिए स्वयं इस बात से आश्वस्त हो जाना नितांत आवश्यक है कि जो अवधारणा या संकल्पना मूलपाठ की उसने ग्रहण की है, वह निःसंदेह सही है और स्वयं पुनरीक्षक को उस विषयवस्तु, अभिव्यक्ति या संकल्पना के विषय में कोई भ्रम या भ्रांति नहीं रह गई है। उसके द्वारा प्रतिपादित संकल्पना मूल लेखक की अभिव्यक्ति और अवधारणा के अनुरूप ही है और समष्टि रूप में उस संकल्पना के विषय में उसे ऊहापोह नहीं है।

प्रायः तकनीकी सामग्री के अनुवाद में लगभग एक जैसी अभिव्यक्तियाँ तथा शब्द-छायाएँ साथ-साथ गुंथी रहती हैं जिनमें महीन संकल्पनात्मक और तकनीकी अंतर होता है। सभी आंगिक और सर्वांगीण संकल्पनाओं का निरंतर निर्वाह और प्रतिपादन करते रहना पुनरीक्षक का कार्य है। अत्यंत जागरुक, सिद्धहस्त, अनुवादक और उतने ही कुशाग्रबुद्धि, सक्षम पुनरीक्षक ही इस श्रेष्ठ कोटि के अनुवाद और पुनरीक्षण को संपन्न कर सकते हैं।

प्रत्येक अनुवाद का एक निश्चित प्रयोजन होता है। यह प्रयोजन मनोरंजक, साहित्यिक या कथात्मक से लेकर विधि, अनुसंधान या विज्ञान या अन्य तकनीकों से भी संबंधित हो सकता है। अतः तत्संबंधी संशोधन करना पुनरीक्षक का प्रमुख कार्य है। उसे यह सुनिश्चित करना होता है कि अनुवादक मूलार्थ या विचार अथवा संकल्पना को अनुवाद में सही-सही और पूर्ण (Perfect) तथा दक्षतापूर्वक कह पाया है या नहीं। यदि अनुवादक इस कार्य को पूरी क्षमता और दक्षता से कर पाया हो तो शब्द-चयन और शब्दों का प्रयोग स्वतः गौण हो जाता है और पुनरीक्षक के लिए अधिक कुछ करने की गुंजाइश नहीं रहती।

पुनरीक्षक को इस क्षेत्र में अत्यधिक सावधानी बरतनी होगी। वस्तुतः मूल संकल्पना का संप्रेषण ही पुनरीक्षण का मुख्य दायित्व है। इस दायित्व को तीव्रतापूर्वक अनुवाद कर रहे अनुवादक पर पूरी तरह नहीं छोड़ा जा सकता है।

यह नितांत जरूरी है कि पुनरीक्षण के स्तर पर मूल संकल्पना गलत संप्रेषित न हो जाए। यह सुनिश्चित करना उसका दायित्व है कि अनुवादक द्वारा की गई अभिव्यक्ति मूल के अनुरूप है या नहीं। यदि ऐसा न हो तो उसे भाषायी और संकल्पनात्मक दोनों प्रकार के संशोधन करने होंगे जो निश्चय ही श्रमसाध्य कार्य है। इस स्थिति में पुनरीक्षक को अनुवादक के स्तर तक उतर कर गहरी पैठ लगानी होगी जिसमें शब्दकोशों से सहायता से लेकर परामर्श या विचार-विमर्श की भी आवश्यकता हो सकती है। ऐसी स्थिति में पुनरीक्षक को अपने आपको अनुवादक की भूमिका में लाना पड़ सकता है, तभी वह मूल के साथ न्याय कर सकता है। संकल्पनात्मक संशोधनों को नीचे लिखे क्रम के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है :

1. अस्पष्ट और संदिग्ध संकल्पना (Hazy and doubtful concept)
2. आंशिक संकल्पना (Part concept)
3. सर्वांगी या संपूर्ण संकल्पना (Whole concept)
4. मूल संकल्पना (Basic concept)
5. निश्चित और असंदिग्ध संकल्पना (Concept beyond doubt)

पुनरीक्षक के लिए पुनरीक्षण करते समय यह देखना आवश्यक है कि लेखक का आशय क्या है अर्थात् लेखक कहना क्या चाहता है? उसका अभिप्राय क्या है? इसका ध्यान पुनरीक्षक द्वारा रखा जाना जरूरी है। लेखक का अभिप्राय या संकल्पना क्या है उसे ऊपर वर्णित तीन भागों में विभक्त करके विश्लेषित किया गया है।

1. वस्तुतः अनुभवी, जागरुक और सिद्धहस्त अनुवादक भी तब तक अनुवाद प्रारंभ ही नहीं करता जब तक कि मूलपाठ या संकल्पना पूर्णतः स्पष्ट न हो। श्रेष्ठ अनुवाद संपन्न करने के विषय में चीनी विद्वान, एच.लीज. फैंग ने यहाँ ने यहाँ तक कहा है कि "जब तक अनुवादक मूल के प्रत्येक शब्द को स्पष्ट करने की स्थिति में न हो तब तक अनुवाद करना मूर्खता ही होगी।" (It would be nothing short of foolishness unless the translator is able to explain every word of it (text).) फिर भी समयाभाव के कारण या वक्त की जरूरत के अनुसार और खासतौर से सरकारी तंत्र में अक्सर कई प्रकार के दबाव और सीमा के रहते हुए तीव्रता से अनुवाद कर डालना अनुवादकों की विवशता होती है। यही कारण है कि अनुवाद सही या पूर्ण संकल्पना ग्रहण नहीं कर पाता अथवा आंगिक पूर्णता ग्रहण कर पाता है या फिर संकल्पना अस्पष्ट ही रह जाती है। अतः पुनरीक्षक अनुवादक की इन विशेषताओं एवं सीमाओं को ध्यान में रखते हुए संकल्पनात्मक अस्पष्टता से बचे और पूरी, सही और सर्वांगीण संकल्पना पर ध्यान दे। इसके लिए पुनरीक्षक के पास अपेक्षाकृत यथेष्ट समय होता है, क्योंकि उस पर व्यक्तिशः लेखन और भाषायी अभिव्यक्ति का परिमाणात्मक भार कम ही होता है। व्यक्तिशः लेखन का कार्य प्रायः अनुवादक कर चुका होता है। अतः संकल्पना की स्पष्टता सुनिश्चित करना पुनरीक्षक का मूल दायित्व है।
2. सर्वांगी या मूल अवधारणा को समझने के लिए आवश्यक है कि पुनरीक्षक संपूर्ण सामग्री का आंगिक और सर्वांगीण अध्ययन करे। आंगिक या आंशिक संकल्पना ग्रहण करने का प्रत्येक अवतरण और अध्याय का निकट से अध्ययन करना आवश्यक है। इस प्रक्रिया के दौरान यदि कोई संदिग्ध स्थल रह जाए तो उसका स्पष्टीकरण और परामर्श विशेषज्ञ से संपर्क और विचार-विमर्श करके हो सकता है।
3. मूलपाठ के अध्ययन की इस प्रक्रिया के दौरान तकनीकी शब्दावली के साथ पुनरीक्षक का साक्षात्कार स्वयं हो जाएगा और पुनरीक्षक अभिव्यक्ति की स्थिति में हो जाएगा।
4. अध्ययन और संशोधन करने की इस मानसिक स्थिति तक आते-आते पुनरीक्षक मूल सामग्री तथा अनुवाद सामग्री से इतना निकट से सुपरिचित होकर अपेक्षित संशोधन कर पाएगा। इसके अतिरिक्त वह न केवल सहज हो पाएगा वरन् किए हुए संशोधनों के विषय में भी पूर्णतया आश्वस्त भी हो सकेगा। निःसंदेह इस प्रकार के पुनरीक्षण से पुनरीक्षक को आत्मसंतोष तो प्राप्त होगा ही, वह लगभग पूर्णतः (Perfection) का प्रतिपादन भी कर सकेगा।

4.5 पुनरीक्षणकर्ता कौन

पुनरीक्षण की संक्षिप्त परिभाषा पर चर्चा के बाद आपने अनुभव किया होगा कि यह कार्य अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। यह पुनरीक्षण दो स्तरों पर होता है। एक तो स्वयं अनुवादक द्वारा किए गए अनुवाद का संशोधन, संवर्धन एवं परिवर्तन हेतु स्वयं देखना। दूसरे, किसी अन्य अन्य योग्य एवं अनुकूल व्यक्ति से उसका पुनरीक्षण एवं संशोधन करवाना। मनुष्य अपनी गलती स्वयं पकड़ ही ले, यह आवश्यक नहीं होता। कभी-कभी तटस्थता एवं ईमानदारी भी नहीं रह पाती। अतः 'निंदक नियरे राखिए' के आधार पर अनुवादक को पुनरीक्षक की शरण लेनी होती है और यदि दूसरा व्यक्ति अनूदित पाठ का परीक्षण करता है तो वह एक पाठक भी भूमिका भी निभाता है जो महत्वपूर्ण है।

4.6 पुनरीक्षण और मूल्यांकन में अंतर

पुनरीक्षण और मूल्यांकन में एक-सी प्रक्रिया होने के कारण कई बार इन्हें अलग रखना असंभावित सा लगता है। अतः आइए इस विषय पर गहराई से विचार करें।

4.6.1 अनुवाद पुनरीक्षण

अनूदित संस्करण की भाषा, उसकी परिनिष्ठता के साथ-साथ संप्रेष्य बनाने का कार्य, पुनरीक्षण के दौरान ही संभव हो सकता है। अनुवाद की गई सामग्री को विषय-वस्तु, भाषा आदि की दृष्टि से दोबारा जाँचना ही पुनरीक्षण है। अनुवाद करते हुए गलतियों का होना स्वाभाविक है, इसलिए पुनरीक्षण की आवश्यकता पड़ती है। इस कार्य को पहले स्वयं अनुवादक और बाद में वस्तुनिष्ठता की दृष्टि से सामान्यतः भिन्न अनुवादक द्वारा किया जाता है। पुनरीक्षक अनुवादक की तुलना में अधिक अनुभवी एवं वरिष्ठ होता है। स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की गहन जानकारी होने के साथ-साथ गंभीर विवेक, आत्म-विश्वास और तटस्थता का भाव होता है। अपने इन गुणों-क्षमताओं के आधार पर पुनरीक्षक अनूदित सामग्री को जाँचकर, सुधारकर और सजा-सँवाकर अधिक सुगढ़ बनाता है।

4.6.2 अनुवाद मूल्यांकन

अनुवाद की जाँच के परिप्रेक्ष्य में प्रयुक्त होने वाला एक अन्य शब्द है-अनुवाद मूल्यांकन। हालाँकि अनुवादक पुनरीक्षरण और अनुवाद मूल्यांकन, दोनों ही अनुवाद-कार्य संपन्न हो जाने के बाद की प्रक्रियाएँ हैं और इनका मूलभूत कार्य 'अनुवाद की जाँच' करना है। किंतु दोनों अवधारणाओं में अंतर के तंतु परिव्याप्त हैं। जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, अनुवाद पुनरीक्षण के अंतर्गत अनूदित सामग्री की जाँच के साथ-साथ उसमें कथ्य, भाषा, शैली और लक्ष्यभाषा की संस्कृति की दृष्टि से जाँच करते हुए अपेक्षित सुधार-संशोधन एवं फॉर्मेट संपादन का कार्य किया जाता है, वहाँ अनुवाद-मूल्यांकन द्वारा अनुवाद में व्याप्त दोषों का मूल खोजने का प्रयत्न किया जाता है। वास्तव में अनुवाद मूल्यांकन, अनूदित साहित्य को गुणात्मक दृष्टि से जाँचने-परखने और इस जाँच-परख के लिए विशिष्ट प्रतिमान अथवा कुछ निश्चित मानदंडों की कसौटी पर कसना है ताकि अनूदित रचना के विभिन्न दोषों के कारणों को उद्‌घाटित कर उसकी गुणवत्ता के विषय में निर्णय दिया जा सके। इस दृष्टि से अनूदित सामग्री की जाँच के पश्चात् अनुवाद के स्वरूप और गुणवत्ता पर टिप्पणी की जाती है। इस निर्णय-स्थापना का उद्देश्य यह होता है कि अनूदित रचना को 'श्रेष्ठ अनुवाद' की श्रेणी में समुचित स्थान दिलाया जा सके। अनुवाद पुनरीक्षण अनुवाद-प्रक्रिया का एक सोपान (अंतिम सोपान) है, जबकि अनुवाद मूल्यांकन, अनुवाद प्रक्रिया के पूर्ण होने के पश्चात् का विवेचन है। इस दृष्टि से अनुवाद पुनरीक्षण अनुवाद से अलग विधा नहीं हैं, जबकि अनुवाद मूल्यांकन का स्वतंत्र अस्तित्व है। इस पर हम अगली इकाई में विस्तार से चर्चा करेंगे। पुनरीक्षक के लिए स्वाभाव से अनुवादक होना अनिवार्य है जबकि अनुवाद मूल्यांकन के लिए अनुवाद का अनुभव होना अनिवार्य नहीं है।

4.7 पुनरीक्षण प्रक्रिया के विभिन्न चरण

इस प्रकार हम देखते हैं कि पुनरीक्षण की इस भाषायी और संकल्पनात्मक संशोधन की प्रक्रिया में अनेक चरण अथवा सोपान क्रमागत रूप से संपन्न होते हैं, जिनमें पुनरीक्षक एक पाठक के रूप में मूलपाठ को अनूदित पाठ के साथ मिलाकर पढ़ता है तथा यह देखता है कि मूलपाठ छूटा तो नहीं है, यदि है तो उसका क्या कारण हो सकता है; या फिर उसकी आवश्यकता है अथवा नहीं, और क्या उस पाठ को फिर से अनूदित कराया जाना चाहिए अथवा उसका भाव दे दिया गया है। यह मूलपाठ तथा अनूदित पाठ का आपस में मिलान करने पर आशय की पूर्णाभिव्यक्ति को भी इस प्रक्रिया में परखता है। इस प्रकार मिलान के उपरांत यदि कोई अशुद्धि या कमियाँ दिखाई देती हैं तो पुनरीक्षक उन्हें पुरा करके का यत्न भी करता है। यह अशुद्धि संदर्भ अथवा कथ्यागत अपर्याप्तता के कारण अनुवादक से होनी संभव है। Reservation का अर्थ आरक्षण अथवा संदेह, आशंका तथा असहमति आदि संदर्भगत अर्थ हो सकते हैं।

भाषायी संषोधन करते समय पुनरीक्षण लक्ष्यभाषा में अनूदित पाठ में आई भाषागत एवं शैलीगत अशुद्धियों को भी सुधारने का यत्न करता है। वह लक्ष्यभाषा की भाषागत व शैलीगत प्रकृति को ध्यान में रखकर किए गए अनुवाद को भी देखता है और महत्वपूर्ण चरण लक्ष्यभाषा की सांस्कृतिक सामाजिक स्वीकार्यता में अनूदित पाठ को देखना होता है।

पुनरीक्षक अनूदित पाठ में मूलपाठ के प्रारूप को भी बनाए रखने की जाँच करता है। अंकीय अथवा वर्ण प्रणाली के प्रारूप तथा अनुक्रमांकादि में अनावश्यक परिवर्तन से विभ्रम पैदा हो सकता है; अतः पुनरीक्षण को यहाँ सावधानी बरतनी पड़ती है। जैसे अक्सर अंग्रेजी के a, b, c, d, e आदि के लिए हिन्दी में अ, आ, आदि के स्थान पर क, ख, ग सहज एवं सुबोध रहते हैं, जबकि 1, 2, 3, 4 के लिए १, २, ३, ४ या I, II, III, IV आदि रोमन अंक के लिए उसी मूल फार्मेट को अपनाया जाना अधिक संप्रेष्य होगा।

4.8 पुनरीक्षक के लिए अपेक्षित गुण

अभी तक हमने पुनरीक्षण की पद्धति, आयामों तथा आधारों पर चर्चा के अनुक्रम में यह अनुभव किया कि पुनरीक्षक में निम्नलिखित गुणों का होना अपेक्षित है :

1. पुनरीक्षक को सजग एवं सचेत होना चाहिए। गिद्ध दृष्टि (अर्थात् Eagle eye) रखनी चाहिए।
2. उसे अनूदित सामग्री के विषय का सम्यक् ज्ञान होना चाहिए।
3. एक ही परिवार की सह-भाषाओं के शब्दों और प्रयोगों की सामान्य जानकारी होनी चाहिए।
4. पुनरीक्षक में भाषा-विश्लेषण की क्षमता होनी आवश्यक है।
5. उसे व्यापक/सामान्य ज्ञान से युक्त होना चाहिए। ज्ञान की दृष्टि से पुनरीक्षक को अनुवादक का पूरक होना चाहिए क्योंकि अनुवादक यदि हृदय (भाव पक्ष) है तो पुनरीक्षक को मस्तिष्क (विचार पक्ष) होना चाहिए।
6. पुनरीक्षक को बहुपठित (well-read) और बहुज्ञ होना चाहिए।
7. पुनरीक्षक में सृजनात्मक क्षमता होनी चाहिए।
8. उसे अद्यतन सामाजिक स्थिति और परिवर्तनों के प्रति जागरुक होना चाहिए।
9. पुनरीक्षक को संशोधक और संपादक (Editor) की भूमिका निभाने वाला होना चाहिए अर्थात् उसमें अनुवाद में तारतम्यता और अंतःसंबंध बनाए रखने की क्षमता होनी चाहिए।
10. पुनरीक्षक में सहज बुद्धि, विवेकपूर्ण और मानवीय दृष्टिकोण होना चाहिए।
11. उसे जन-जीवन को प्रभावित करने वाले यांत्रिक परिवर्तनों, वैज्ञानिक खोज और औद्योगिक विकास से सामान्यतः परिचित होना चाहिए।

12. उसमें तटस्थता और निर्णय (Impartility and determination) लेने की क्षमता होनी चाहिए ।
13. उसमें धैर्यशीलता और समर्पित भाव से काम करने की क्षमता भी होनी चाहिए।
14. विषयवस्तु और उसके प्रकार के आधार पर अर्थात् पत्रकारिता, कार्यालयी, विधि आदि विषयों के आधार पर पुनरीक्षण की प्रक्रिया तय करनी चाहिए।
15. अनुवाद में अनुवादक की शैली तथा उसकी पहचान की गंध नहीं आनी चाहिए।
16. पुनरीक्षक को सीमाशुल्क अधिकारी (Custom officer) की भूमिका निभानी चाहिए अर्थात् प्रत्येक वस्तु-अनुवाद के अंग-प्रत्यंग की निष्ठापूर्वक जाँच करें।
17. पुनरीक्षक को पुनरीक्षण एवं संशोधन करने के बाद अनूदित सामग्री का नीर-क्षीर विवेक भाव से तटस्थ मूल्यांकन करना चाहिए। वह एक प्रकार से तीसरी आँख होता है।

4.9 पुनरीक्षण के दस व्यावहारिक सूत्र

पुनरीक्षक के लिए अनिवार्य गुणों के बारे में हालाँकि विस्तार से काफी चर्चा की जा चुकी है परंतु उपयुक्त सभी दायित्वों को निभाने के लिए पुनरीक्षक के लिए अपेक्षित गुणों को निम्नलिखित दस व्यावहारिक सूत्रों में सूत्रबद्ध किया जा सकता हैः

1. पुनरीक्षण प्रारंभ करने से पूर्व मूलपाठ को भलीभाँति पढ़ना चाहिए तभी वास्तविक भाव ग्रहण करना संभव हो पाएगा और मूल का उद्देश्य एवं संकल्पना स्पष्ट होगी।
2. अनूदित सामग्री को मूलपाठ के परिप्रेक्ष्य में पढ़ना और समक्षना चाहिए और साम्य एवं वैषम्य के आधार पर उसका मूल्यांकन करना चाहिए।
3. मूलभूत विचार/भाव/उद्देश्य/संप्रेष्य क्या है, उसे रेखांकित कर लेना चाहिए।
4. अनुवाद किस पाठक वर्ग के लिए किया गया है, इस बात को केंद्र में रखना चाहिए क्योंकि पाठक वर्ग के अनुसार भाषा का स्वरूप भी बदलता है।
5. शब्दों और वाक्याशों के अभिधात्मक अर्थ के साथ-साथ लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ को भी ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही शब्दों की अनेकार्थता और बहु-अर्थता के प्रति पूरी तरह सजग एवं सचेत रहना चाहिए।
6. अनूदित सामग्री संपूर्ण और सही अर्थ व्यक्त कर पा रही है अथवा नहीं, इस संदर्भ में आश्वस्त होना चाहिए और समग्रता में उसका क्या प्रभाव परिलक्षित हो रहा है, इसे ध्यान में रखकर सामग्री का जाँच-पड़ताल करनी चाहिए।
7. अनूदित सामग्री के पाठक मूल भाषा को नहीं जानते। अतः उनके प्रति कोई अन्याय न हो सके, इसके लिए विषयवस्तु और भाषाशैली की दृष्टि से अनूदित पाठ की जाँच करनी चाहिए।
8. मूल भाषा के वाक्य-विन्यास की छाया अनूदित भाषा के वाक्य-विन्यास से आच्छादित नहीं होनी चाहिए।
9. यदि अनुवादक किसी संदर्भ या घटना को व्याख्यायित नहीं कर सका हो तो पुनरीक्षक को अपेक्षानुसार पाद-टिप्पणी में उसकी व्याख्या भी करनी चाहिए।
10. अनुवाद में अनुवादक की शैली की झलक तो आ सकती है परंतु पुनरीक्षक को अपनी शैली लाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। भूमिका तटस्थ संशोधक की उसकी होना ही श्रेयस्कर है क्योंकि इस 'पाठ' का सृजक केवल अनुवादक ही है।

4.10 पुनरीक्षण का अभ्यास

उपर्युक्त अपेक्षाओं के अनुपालन की दृष्टि से अनूदित पाठ में पुनरीक्षण के स्तर पर किए जाने वाले संशोधन निम्नलिखित उदाहरणों में द्रष्टव्य हैं। सर्वप्रथम पदबंध/वाक्यांश स्तर पर कुछ उदाहरण दिए गए हैं। जब आप

अधो-रेखांकित पदों को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तो आपको स्पष्ट हो जाएगा कि पुनरीक्षण क्यों आवश्यक है और इसका क्या महत्व है।

क्र.सं.	मूल	अनुवाद	पुनरीक्षित अनुवाद
1	Court attachment Orders	न्यायालय का कुर्की संबंधी आदेश	न्यायालय द्वारा जारी कुर्की आदेश
2	Processing of indents & monitoring of supplies	माँग-पत्र एवं मॉनीटरन आपूर्ति संबंधी प्रक्रिया।	माँग-पत्र संबंधी प्रक्रिया और पूर्ति की मॉनीटरिंग
3	Centre of Advance Studies	प्रगति अध्ययन केंद्र	उच्च अध्ययन केंद्र
4	Ground realities	भूमि की वास्तविकता	ठोस वास्तविकता/ वस्तु-स्थिति
5	Resource person	संसाधन विशेषज्ञ	ज्ञान-साधन विशेषज्ञ

नीचे कुछ वाक्यों के अनुवाद और पुनरीक्षित अनुवाद नमूने के तौर पर दिए गए हैं। अब आप को उनवाद और पुनरीक्षित अनुवाद में तुलना करके देखना होगा कि अनुवाद के स्तर पर क्या और किस प्रकार की गलतियाँ हुई हैं और पुनरीक्षण करते समय उनमें क्या और किस प्रकार के संशोधन किए गए हैं।

1	**मूलपाठ**	Juvenile justice is the area of criminal law applicable to persons not old enough to be held responsible for criminal acts.
	किया गया अनुवाद	किशोर न्याय आपराधिक विधि का ऐसा क्षेत्र है जो उन व्यक्तियों पर लागू होता है जो आपराधिक कार्यों के लिए जिम्मेदार होने के लिए बड़ी आयु के नहीं होते।
	पुनरीक्षित अनुवाद	किशोर न्याय दंड विधि का ऐसा क्षेत्र है जो ऐसे किशोरों पर लागू होता है जिनकी अवस्था (आयु) इतनी नहीं होती कि उन्हें आपराधिक कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सके।
2	**मूल पाठ**	An early compliance of the above will be appreciated.
	किया गया अनुवाद	उपर्युक्त के शीघ्र अनुपालन की प्रशंसा की जाएगी।
	पुनरीक्षित अनुवाद	उपर्युक्त विषय पर शीघ्र कार्रवाई करने पर हम आपके आभारी होंगे।

दिए गए पहले उदाहरण में 'व्यक्तियों' शब्द का प्रयोग करने से किशोरावस्था शब्द छूट गया है। अतः किशोर न्याय की भावना द्योतित नहीं होती जबकि प्रस्तावित अनुवाद में व्यक्तियों के स्थान पर किशारों और आयु के स्थान पर अवस्था शब्दों का प्रयोग करने से किशोर न्याय के सिद्धांत का औचित्य सिद्ध हो जाता है। इसी प्रकार criminal law पारिभाषिक शब्द है जिसके लिए पर्याय दंड विधि है, न कि आपराधिक विधि। इसी प्रकार कोश देखे बिना अनुवादक ने अपने अल्प ज्ञान के आधार पर appreciation शब्द के लिए प्रशंसा शब्दों का प्रयोग किया है। यहाँ पुनरीक्षक मूल शब्द को सही परिप्रेक्ष्य में शुद्ध करेगा।

3	**मूल पाठ**	Member of the service is expected to study as many as foreign languages as he may be able to do without check to his other service.
	किया गया अनुवाद	सरकारी कर्मचारी से अपेक्षा की जाती है कि वह अनेक विदेशी भाषाओं का अध्ययन करें क्योंकि वह अपने अन्य कार्यों का नुकसान किए बिना ऐसा कर सकता है।

	पुनरीक्षित अनुवाद	इस सेवा के कर्मचारी (सदस्य) से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अधिक से अधिक विदेशी भाषाएँ सीखे लेकिन इस बात का भी ध्यान रखे कि इससे उसके अन्य कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

उपर्युक्त उदाहरण से अनुवादक ने स्रोतभाषा के as many as....as he may के पाठ का सही विश्लेषण न कर अर्थ में त्रुटि कर दी। अपने अन्य कार्यों का नुकसान किए बिना से उसके व्यक्तिगत कार्य का बोध होता है जबकि प्रस्तावित अनुवाद में उसके अन्य कार्यों से उसे सौंपे गए कार्यालयी कार्यों का बोध होता है।

4	**मूल पाठ**	Prem Chand is the greatest name in modern Indian Literature, and next to Rabindranath Tagore, the only one known outside Hindi. He pushed modern Hindi and Urdu fiction from the medieval age of the present times.
	किया गया अनुवाद	आधुनिक भारतीय साहित्य में प्रेमचंद का नाम सबसे अधिक जाना जाता है उनके बाद रविंद्रनाथ टैगोर ही एकमात्र साहित्यकार है जिन्हें भारत से बाहर भी जाना जाता है। प्रेमचंद ने आधुनिक हिंदी और उर्दू कथा साहित्य को मध्यकालीन युग से निकालकर वर्तमान काल से संबद्ध किया।
	पुनरीक्षित अनुवाद	प्रेमचंद आधुनिक भरतीय साहित्य की महान विभूति हैं और रवींद्रनाथ टैगोर के बाद वे एकमात्र ऐसे साहित्यकार है जिनकी ख्याति हिंदी साहित्य से बाहर में भी है। प्रेमचंद ने आधुनिक हिंदी और उर्दू कथा साहित्य को मध्यकालीन युग से निकालकर आधुनिक रूप में प्रतिस्थापित किया।

इस उदाहरण में अनुवादक ने अनुवाद में टैगोर का नाम प्रेमचंद के बाद कर दिया है जिसे पढ़कर मूलपाठ का सही बोध न होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

5	**मूल पाठ**	At the time of making these statements by the Hon. Minister the Secretary has to remain present in the official Gallery, Lok Sabha to assist, if necessary, the Minister, as also to attend to any exigencies that may arise in relation to these statements.
	किया गया अनुवाद	श्रीमान मंत्री महोदय द्वारा यह वक्तव्य देने के समय सचिव को सरकारी दीर्घा, लोकसभा में सहायता के लिए उपस्थित रहना होता है। मंत्री भी ऐसी आकस्मिकता में सहायता करते हैं, जो वक्तव्य के संबंध में हो सकती है।
	पुनरीक्षित अनुवाद	माननीय मंत्री महोदय द्वारा वक्तव्य दिए जाने के समय सचिव को लोकसभा की सरकारी दीर्घा में रहना चाहिए ताकि वे आवश्यकता पड़ने पर माननीय मंत्री महोदय को सहयोग दे सकें और उनके वक्तव्य से उत्पन्न किसी आकस्मिक स्थिति का समाधान कर सकें।

6	**मूल पाठ**	At any time before the item included in the list of Business is taken up by the House, the Govt. can withdraw that item.
	किया गया अनुवाद	किसी भी समय सदन द्वारा किसी मद को कार्यों की सूची में शामिल करने से पहले लिए जाने पर सरकार इस मद को वापस ले सकती है।
	पुनरीक्षित अनुवाद	सदन द्वारा किसी मद को कार्यों की सूची में शामिल किए जाने से पहले सरकार उस मद को कभी भी वापस ले सकती है।

उपर्युक्त वाक्य में At any time before पदबंध का अर्थ देते समय पदक्रम सही नहीं है।

7	**मूल पाठ**	Manufacturers-contractors must satisfy themselves that the stores are in accordance with the terms of contract and fully conform to the required specification by carrying out a thorough pre-inspection of each lot before actually tendering the same for same for inspection to the Quality Assurance Officer nominated under the terms of the contract. A declaration by the contractor that a necessary pre-inspection has been carried out on the stores tendered, will be submitted along with the challan. The declaration will also indicate the methods followed in carrying out pre-inspection showing the features checked/tested and will have the test certificate attached with challan/declaration.
	किया गया अनुवाद	उत्पादक एवं ठेकेदार को स्वयं अपने आप को ठेके की शर्तों और आवश्यक विनिर्देशों के अनुसार यह संतुष्ट कर लेना चाहिए कि खेप/भंडार ठेके की शर्तों के अनुरूप है। ठेके की शर्तों के अंतर्गत नामित गुणवत्ता आश्वासन अधिकारी के पास निरीक्षण के लिए भेजने से पहले प्रत्येक लॉट का पूर्ण रूप से गहन निरीक्षण कर लेना चाहिए। ठेकेदार चालान के साथ एक ऐसा घोषणा-पत्र भी जमा करेगा कि भेजे गए भंडार का आवश्यक पूर्व निरीक्षण कर लिया गया। जमा किए गए घोषणा-पत्रा में, पूर्व निरीक्षण करने में की गई जाँच/परीक्षण के तरीकों को भी द ाएगा और जाँच प्रमाण-पत्र को चालान/घोषणा के साथ संलग्न करेगा।
	पुनरीक्षित अनुवाद	विनिर्माता एवं संविदाकार को संविदा की शर्तों के अंतर्गत नामित गुणवत्ता आ वासन अधिकारी के पास निरीक्षण के लिए भेजने से पहले प्रत्येक लॉट का पूर्ण रूप से निरीक्षण कर लेना चाहिए और उसे यह संतुष्टि कर लेनी चाहिए कि सामान संविदा की शर्तों और अपेक्षित विनिर्देशों के अनुरूप है। संविदाकार चालान के साथ एक ऐसा घोषणा-पत्र भी प्रस्तुत करेगा कि उसने सामान का आवश्यक पूर्व निरीक्षण कर लिया है। वह घोषणा-पत्र में, पूर्व-निरीक्षण करने में अपनाई गई परीक्षण पद्धतियों को भी दर्शाएगा और चालान/घोषणा-पत्र के साथ परीक्षण प्रमाण-पत्र भी संलग्न करेगा।

इस अनुवाद में अनुवादक ने कार्य-कारण भाव को नहीं समझा है। विनिर्माता को निरीक्षण करने के बाद ही पता चलेगा कि समान संविदा की शर्तों और विनिर्देशों के अनुरूप है। परंतु अनुवाद में क्रम बदल दिया गया है। विनिर्माता पहले संतुष्टि कर लेगा फिर निरीक्षण। ऐसे अनुवादों को पुनरीक्षक सही रूप में प्रस्तुति कर सकता है।

नीचे कुछ वाक्यों के अनुवाद और पुनरीक्षित अनुवाद नमूने के तौर पर दिए गए हैं। अब आप को अनुवाद और पुनरीक्षित अनुवाद में तुलना करके स्वयं देखना होगा कि अनुवाद के स्तर पर क्या और किस प्रकार की गलतियाँ हुई थीं और पुनरीक्षण करते समय उनमें क्या और किस प्रकार के संशोधन किए गए हैं।

क्र.सं.	**मूल**	**अनुवाद**	**पुनरीक्षित अनुवाद**
1	The Centre CRRID benefited immensely from his advice and guidance as the first chairman of its Board of Governors.	केंद्र अपने शासक मंडल के प्रथम अध्यक्ष के रूप में उनकी सलाह तथा दिशानिर्देशों से अत्यधिक लाभान्वित हुआ है।	शासक मंडल के प्रथम अध्यक्ष के रूप में उनका परामर्श एवं मार्गदर्शन इस केंद्र के लिए काफी उपयोगी रहा है।
2	Microscopy opened up a whole world of **fine** structure.	सूक्ष्मदर्शी ने **अति सुंदर** संरचना के नए युग को खोला।	सूक्ष्मदर्शी से पूरी **सूक्ष्म** जैविक संरचना को देखना संभव हो गया है।
3	What are credit facilities available in your Bank?	आपके बैंक में रकम/धन जमा कराने की क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं?	आपके बैंक में कौन-कौन सी ऋण सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

4	The Plant has been reported from Punjab.	यह पौधा पंजाब से प्रतिवेदित है।	यह पौधा पंजाब में भी मिलता है।
5	Today's cultures have strong historical, religious & legal legacy that…	आज की संस्कृति के इतिहास, धर्म और कानूनी बपौती से पता चलता है कि	आज की संस्कृति में ऐसी ठोस ऐतिहासिक, धार्मिक और कानूनी परंपराएँ मिलती हैं जो..
6	I am proud of the good work being done by this Centre.	केंद्र द्वारा किए जा रहे अच्छे कार्य पर मुझे गर्व है।	मुझे इस बात का गर्व है कि यह केंद्र बहुत अच्छा काम कर रहा है।
7	Work hard, play by the rules and never quit.	परिश्रमी बने, नियमों का पालन करें और जिम्मेदारी से न बचें।	कड़ी मेहनत, अनुशासन और पक्का इरादा।
8	To equip the operating staff with the skill and knowledge of the scheme, corporation Bank brought out this manual.	प्रचालनात्मक स्टाफ को योजना के प्रचालन के कौशल एवं ज्ञान से सुसज्जित करने के लिए कार्पोरेशन बैंक ने इस मैनुअल का प्रकाशन किया है।	कार्पोरेशन बैंक ने अपने प्रचालन स्टाफ को इस योजना के प्रचालन कौशल एवं ज्ञान की जानकारी देने के लिए यह मैनुअल प्रकाशित किया है।
9	I commend the efforts of I.T.D. for developing the scheme and of O&M Division for planning and designing the manual in a well structured and lucid manner.	मैं योजना का विकास करने के लिए I.T.D. के प्रयासों तथा एक सुसंरचित एवं बेहतरीन तरीके के मैनुअल का आयोजन एवं अभिकल्प करने में संगठन एवं पद्धति प्रभाग के प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ।	मैं इस योजना को तैयार करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के प्रयासों की तथा सुव्यवस्थित एवं सुबोध तरीके से मैनुअल की रूपरेखा तैयार करने और प्रस्तुत करने के लिए संगठन एवं पद्धति प्रभाग के प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ।
10	This is an easier and more convenient way of propagating grapevines.	यह अंगूर की बेलों का प्रचार करने की अपेक्षाकृत आसान और सुविधाजनक विधि है।	यह अंगूर की बेलों के प्रवर्धन की अपेक्षाकृत सरल और सुविधाजनक विधि है।
11	Supervisor shall not knowingly permit a man who is under influence of intoxicants to work.	पर्यवेक्षक जानबूझकर किसी भी व्यक्ति को जो मादक पदार्थ के प्रभाव में है कार्य करने की अनुमति नहीं देगा।	यदि पर्यवेक्षक यह जानता हो कि कोई व्यक्ति नशे में हैं तो वह उसे कार्य करने की अनुमति नहीं देगा।
12	Safety Belts in service shall not be load tested.	सेवा में सुरक्षा बेल्टों का भार परीक्षण नहीं किया जाएगा।	प्रयोग की जा रही सुरक्षा बेल्टों का भार परीक्षण नहीं किया जाएगा।
13	As the domestic containers are not moving to sea area.	क्यों घरेलू कंटेनर समुद्री क्षेत्र में नहीं जाते।	क्योंकि देशी कंटेनर समुद्री क्षेत्र में नहीं ले जाए जाते।
14	Good governance gives rise to an informed, participative and responsible society with shared values, norms, standards and aspirations.	यह साझा मूल्यों, मानदंडों और आकांक्षाओं सहित एक जानकार, सहभागी तथा उत्तरदायी समाज का निर्माण करता है।	यह एक ऐसे सूचना संपन्न, सहभागी तथा उत्तरदायी समाज का निर्माण करता है जिसके मूल्य, मानदंड और आकांक्षाएँ साझा हैं।
15	Even a minor irregularity may conceal a potential fraud.	छोटी अनियमितता से भी प्रमुख धोखा-धड़ी छिप सकती है।	जरा सी लापरवाही से गंभीर धोखा-धड़ी नजर से चूक सकती है।

इन उदाहरणों से आपको तुलना करने पर यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद में कहीं तो विषय अथवा संकल्पना स्पष्ट न होने के कारण त्रुटि हुई है और कहीं अभिव्यक्ति करते समय। इस प्रकार पुनरीक्षण के स्तर पर अनुवादक

स्वयं या कोई अन्य व्यक्ति अनूदित सामग्री की जाँच करके उसके भाषागत दोषों को दूर करता है और विषयगत दृष्टि से अनूदित पाठ को प्रमाणित बनाने का प्रयास करता है।

अब तक आपको उपर्युक्त सैद्धांतिक चर्चा एवं व्यावहारिक उदाहरणों से पूर्णतया स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद को उत्तम अनुवादक बनाने की प्रक्रिया में पुनरीक्षक की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है और पुनरीक्षण कितना श्रमसाध्य कार्य है। अब आप नीचे दिए गए उदाहरणों में मूलपाठ को भलीभाँति समझने के बाद प्रस्तुत अनुवाद से उसकी तुलना करेंगे और विषय एवं भाषा के स्तर पर हुई त्रुटियों को दूर करते हुए अनुवाद में संशोधन करने का स्वयं प्रयास करेंगे। किंतु इस स्तर पर आपको बहुत ही सावधानी और सजगता बरतनी होगी।

मूल (1)

Railway production units are striving to develop new products for the Indian Railways. AC 3-Tier coaches have been manufactured by RCF which would make AC travel cheaper and comfortable. Further, production of 5000 HP electric locomotives and fuel efficient diesel locomotive have also commenced at Chittaranjan Locomotive Works and Diesel Locomotive Works respectively. Diesel multiple units for suburban non-electrified routes and mainline electric multiple units for electrified sections have been manufactured by Integral Coach Factory, Chennai. Passengers originating has risen from 1,284 million in 1950-51 to 4,348 million in 1997-98 and passenger kilometer from 66.52 billion in 1950-51 to 357 billion in 1996-97. Despite constraint of resources, the railways have been able to cope with increasing demand of passenger traffic. Railways are the premier mode of passenger transport both for long distance and suburban traffic. During 1997-98, Indian Railways introduced 166 new trains, extended the run of 104 trains and increased the frequency of 22 trains in non-suburban sector. Similarly, in the suburban sector, railways introduced 94 new trains and extended the run of 58 trains.

Glossary

क. सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी पर्याय
1	Production units	उत्पादन युनिट
2	RCF	रेल कोच फैक्टरी
3	Non-electrified routes	अविद्युतीकृत मार्ग
4	Electrified sections	विद्युतीकृत खंड
5	Premier mode	मुख्य साधन
6	Suburban traffic	उपनगरीय यातायात
7	Extend	बढ़ाना
8	Frequency	आवृत्ति

अनुवाद

भारतीय रेलों हेतु उत्पादन इकाइयाँ नए उत्पाद विकसित करने का भरसक प्रयत्न कर रही हैं। रेल कोच फैक्टरी द्वारा वातानुकूलित 3-टियर सवारी डिब्बों का निर्माण किया गया है। इससे वातानुकूलित यात्रा सस्ती (कम खर्चीली) और आरामदेह हो जाएगी। क्रमशः चितरंजन रेल इंजन कारखाना तथा डीजल रेल इंजन कारखाना में 5000 अश्व शक्ति के विद्युत रेल इंजन तथा ईंधन किफायती इंजन डीजल रेल इंजन बनाने का कार्य भी शुरू किया जा चुका है। उपनगरीय विद्युत रहित मार्गों हेतु डीजल बहु इकाइयों तथा विद्युतीकृत खंडों हेतु मुख्य लाइन विद्युत बहु एककों को इंटीग्रल कोच फैक्ट्री ने निर्मित किया है। 1950-51 में रेल यात्रियों की संख्या 1,2840 लाख थी जो 1997-98 में बढ़कर 43480 लाख तथा 1950-51 में पैसेंजर कि.मी. 66.52 बिलियन था जो 1996-97 बिलियन हो गया। संसाधनों की कमी के बावजूद भारतीय रेल यात्री यातायात की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने में समर्थ रही

है। भारतीय रेलवे ही लंबी दूरी तथा उपनगरीय यात्री परिवहन का मुख्य साधन है। 1997-98 के दौरान गैर उपनगरीय क्षेत्र में भारतीय रेल ने 166 नई गाड़ियाँ 104 रेल गाडियों की दूरी बढ़ाई तथा 22 रेल गाड़ियों की आवृत्ति बढ़ाई इसी प्रकार उपनगरीय क्षेत्र में रेलवे ने 94 नई रेल गाडियाँ चलाई और 58 रेलगाड़ियों की दूरी बढ़ा दी।

मूल (2)

The Passenger Carrying Vehicle (PCV) fleet has not grown commensurate with traffic demand due to financial constraints and limited capacity to manufacture them. A new coach factory at Kapurthala was set up to meet the additional requirement of demand of coaches. Efforts also have been made to absorb growing traffic demands by improving the design of the existing stock. Coaches with better layout and more seating capacity are being manufactured now. 2-tier and 3-tier A.C. Coaches have replaced First Class coaches of lower capacity in most trains. In order to improve capacity and to provide more comfort to passengers, 24 state-of-the-art coaches, having speed potential of 160 kmph, are being procured from Mès ALSTOM, Germany with arrangement for 'Transfer of Technology" to enable manufacture of new design coaches at RCF and ICF.

Glossary

क. सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी पर्याय
1	Passenger Carrying Vehicle (PCV)	सवारी डिब्बे
2	Commensurate with	के अनुरूप
3	Replace	प्रतिस्थापित
4	State-of-art	अत्याधुनिक
5	Transfer of Technology	प्रौद्योगिकी अंतरण

अनुवाद

भारतीय रेलों के सवारी डिब्बों के बेड़े में वित्तीय तंगियों और सवारी डिब्बों के निर्माण की सीमित क्षमता की वजह से यातायात की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप वृद्धि नहीं हुई है। सवारी डिब्बों की अतिरिक्त आवश्यकता/माँग को पूरा करने के लिए कपूरथला में एक नया सवारी डिब्बा कारखाना स्थापित किया गया था। इस बीच भारतीय रेलों ने मौजूदा स्टॉफ के डिजाइन में आ ाोधन करके बढ़ती हुई यातायात की माँग को पूरा करने के प्रयास भी किए हैं। उन्नत अभिकल्प तथा बैठने के स्थान की अधिक क्षमता वाले नए सवारी डिब्बों का निर्माण किया जा रहा है। अधिकांश गाड़ियों में कम क्षमता वाले पहले दर्जे के सवारी डिब्बों के स्थान पर 2-टियर और 3-टियर वातानुकूल सवारी डिब्बे लगाए गए हैं। क्षमता में वृद्धि करने तथा यात्रियों को और अधिक सुविधा मुहैया कराने के उद्देश्य से मैसर्स एल्सटॉम, जर्मनी से 160 कि.मी. प्रतिघंटा की गति की क्षमता से चलने वाले 24 अत्याधुनिक सवारी डिब्बे 'प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण' की व्यवस्था सहित खरीद जा रहे हैं ताकि रेल कोच फैक्टरी तथा सवारी डिब्बा कारखाना में इन नए अभिकल्प के सवारी डिब्बों का विनिर्माण किया जा सके।

मूल (3)

Initially, Railway's telecom requirements were met through DOT. However, in order to ensure efficient performance of their telecom circuit, Railways have, over the years, developed their own dedicated telecommunication networks and are gradually reducing their dependence on DOT. As a step towords moderniztion and improvement in the reliability and efficiency of telecom services, Digital Electronic Exchages, Digital Microwave System, Optical Fibre Communication (OFC) System and Mobile Train Radio Communication Systems are being progressively inducted on IR. During the year, a total of 10,580 lines were connected to Digital Electronic Exchanges as replacement and expansion of the exiting Strowger Type Exchanges, bringing the total electronic lines ot 167,426, constituting about 96% of the total installed capacity of 176,904 lines on IR. Total 333 Route kms.

Of high-capacity digital microwave links were added and 1,007 Route kms. Of OFC installed for improving the efficiency of control circuits. For improving passenger amenities, microprocessor-based Public Address System at 15 stations and Electronic Train indication Boards at 6 stations were provided during the period. Interctive Voice Response system (IVRS) for giving information about train arrival and departure and status of availability of reservation on train been installed at 92 stations during the year.

Glossary

क्र. सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी पर्याय
1	DOT	दूरसंचार विभाग
2	Reliability	विश्वसनीयता
3	Efficiency	दक्षता
4	IR	भारतीय रेलवे
5	Passengers amenities	यात्रियों की सुविधाओं

अनुवाद

आरंभ में रेलवे में दूरसंचार आवश्यकताओं को दूरसंचार विभाग द्वारा पूरा किया जाता था। बहरहाल इन वर्षों में रेलवे ने अपने दूरसंचार सर्किटों को दक्ष बनाने के लिए दूरसंचार नेटवर्क बनाने का विकास किया है और धीरे-धीरे दूरसंचार विभाग पर निर्भरता समाप्त कर रहा है। दूरसंचार सेवाओं में दक्षता और सुधार लाने के लिए आधुनिकीकरण और विकास में भारतीय रेलवे ने डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज, डिजिटल माइक्रोवेव प्रणाली, ऑप्टिकल फाइबर कम्यूनिकेशन प्रणाली तथा मोबाइल ट्रेन, रेडियो कम्यूनिकेशन आदि धीरे-धीरे शुरू किए जा रहे हैं। इस वर्ष के दौरान 10,580 लाइनों को डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज के साथ जोड़ा गया। कुल 1,67,426 इलेक्ट्रॉनिक लाइनें बनाई गईं जो भारतीय रेलवे की 1,76,904 लाइनों का 95ः है। नियंत्रण सर्किट की दक्षता को जोड़ने के लिए उच्च क्षमता के 333 मार्ग किलोमीटर डिजिटल माइक्रोवेव संपर्क जोड़ा गया और 1007 मार्ग किलोमीटर ओ.एफ.सी. लगाए गए। इस अवधि के दौरान यात्रियों की सुविधाओं को बढ़ाने के लिए 15 स्टेशनों पर माइक्रो प्रोसेस आधारित जन संबोधन प्रणाली तथा 6 स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक ट्रेन सांकेतिक बोर्ड लगाए गए। इस वर्ष के दौरान 92 स्टे ानों पर गाड़ियों के आवागमन/प्रस्थान तथा आरक्षण स्थिति की उपलब्धता की जानकारी हेतु आई.आर.वी.एस. प्रणाली लगाई गईं

मूल (4)

Over the years, engineering industries in the country have registered a phenomenal growth to generate a strong base in a wide-range of heavy and light engineering industries covering a broad spectrum of capital goods and consumer durable products. Bulk of capital goods required for power projects, fertilizer plants, cement plants, steel plants, mining equipment and petrochemical plants are being met from indigenous production. Construction machinery and equipment for irrigation projects, diesel engines, pumps and tractors for agriculture, vehicles etc., transport are also being met from within the country. Engineering industries have also demonstrated their capacity to manufacture large size plants and equipments for various sectors such as power generation, fertilizers and cement.

Major manufacturers of machine tools have now developed CNC machine tools such as machining centres, turning centres etc. The machine tool industry has also commenced production of high productive machine such as industrial robots, flexible manufacturing system, etc. Indigenous industry in not only exporting general purpose machine to advanced countries but have also commenced export of CNC machine tools. Overall production of machine tools has increased from just under Rs. One crore in 1950-51 to Rs. 752.80 crore in 1997-98.

Glossary

क्र. सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी पर्याय
1	Phenomenal	अद्‌भुत/विलक्षण/असाधारण
2	Power projects	विद्युत परियोजनाएँ
3	Fertilizer plants	उर्वरक संयंत्र
4	Cement plants	सीमेंट कारखाने
5	Steel plants	इस्पात संयंत्र
6	Mining equipment	खनन उपस्कर
7	Petrochemical plants	पेट्रो रसायन संयंत्र
8	Indigenous industry	स्वदेशी उद्योग
9	Turning centres	खराद केंद्र
10	Flexible manufacturing	लचीली उत्पादन प्रणाली

अनुवाद

पिछले वर्षों के दौरान इंजीनियरी उद्योग ने शानदार प्रगति की है और भारी तथा हल्के इंजीनियरी उद्योगों के क्षेत्र में अपना आधार सुदृढ़ कर लिया है। इस उद्योग के अंतर्गत पूँजीगत साज-सामान और टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं समेत कई तरह का सामान बनाने वाले कारखाने शामिल हैं। पूँजीगत साज-सामान का निर्माण करने वाले उद्योग जो वस्तुएँ बनाते हैं, उनका उपयोग बिजली परियोजनाओं, उर्वरक संयंत्रों, सीमेंट कारखानों, इस्पात संयंत्रों, खनन उपकरणों तथा पेट्रो रसायन संयंत्रों आदि में किया जाता है। इन उद्योगों के लिए आवश्यक भारी मशीनों और उपकरणों का उत्पादन अब देश में ही होने लगा है। इसके अलावा सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण में काम आने वाली मशीनों और उपकरणों, डीजल इंजनों, कृषि के लिए पंप सेटों और ट्रैक्टरों, वाहनों तथा परिवहन उपकरणों का भी देश में ही उत्पादन होने लगा है। इंजीनियरी उद्योग ने विद्युत उत्पाद, उर्वरक और सीमेंट उत्पादन जैसे विभिन्न क्षेत्रें के लिए विशाल आकार के संयंत्रों और उपकरणों के उत्पादन की अपनी क्षमता का भी परिचय दिया है।

मशीनों और उपकरणों के अधिकतर उत्पादकों ने मशीनिंग सेंटर, मिलिंग सेंटर और टर्निंग सेंटर जैसे महत्वपूर्ण यंत्रों तथा उपकरणों का विकास कर लिया है। इस उद्योग ने औद्योगिक रोबोट और लचीली उत्पादन प्रणालियों के क्षेत्र में उच्च उत्पादकता वाली मशीनों का उत्पादन शुरू कर दिया है। भारत का यंत्र और उपकरण उद्योग न सिर्फ सामान्य उपयोग की मशीनों का दुनिया के विकसित देशों को निर्यात कर रहा है, बल्कि इसने सी.एन.सी. मशीनों और उपकरणों का निर्यात भी प्रारंभ कर दिया है। देश में मशीनों और उपकरणों का निर्यात भी प्रारंभ कर दिया है। देश में मशीनों और उपकरणों का उत्पादन 1950-51 में एक करोड़ रुपए से भी कम का होता था, जो 1997-98 में बढ़कर 752.80 करोड़ रुपए हो गया।

4.11 सारांश

आपने इस इकाई में जाना कि अनुवाद पुनरीक्षण में अनुवाद की जाँच, सुधार, तथा उसकी भाषा-शैलीगत पर्याप्तता आदि पर गौर किया जाता है। इससे जहाँ सामान्य भूलों का सुधार हो जाता है वहीं अनावश्यक विस्तार या अंतराल को भी रोका या पूरा किया जा सकता है। पुनरीक्षक एक अच्छा पाठक, भाषाविद् तथा समाज-संस्कृति के प्रति संवेदी कुषल अनुवादक होता है जो तटस्थ भाव से मूल तथ लक्ष्यपाठ के मध्य 'तादात्म्य' बिठाने का श्रम करता है। पुनरीक्षक अनुवादक की अपेक्षा अधिक सजग एवं पाठकीय दृष्टि संपन्न व्यक्ति होता है जो इस 'अन्यीकृत' पाठ की लक्ष्य वर्ग में स्वीकार्यता में पक्ष पर अपना ध्यान केंद्रित करता है।

इस पाठ में वर्णित सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त करने और प्रस्तुत अनुवाद का सावधानी एवं सजगतापूर्वक संशोधन करने के बाद आप यह भी महसूस कर करेंगे कि आप एक अच्छे अनुवादक तो बन ही गए हैं साथ ही एक अच्छे पुनरीक्षक के गुणों से परिचित हुए हैं। अनुवादक के नाते आप अनुवाद करते समय जो त्रुटियाँ करते रहे हैं, उन्हें पुनरीक्षण के स्तर पर दूर करने में आप सक्षम बन जाएंगे। पाठ्य साम्रगी में प्रदत्त अभ्यासों के दौरान आपने यह भी संज्ञान लिया होगा कि अनुवादक को स्रोत और लक्ष्यभाषा की संरचनात्मक जानकारी, पारिभाषिक शब्दावली एवं लोक प्रचलित शब्द-अर्थ का ज्ञान आवश्यक होता है। पुनरीक्षक की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है यह भी आपने इस इकाई में विस्तार से जाना।

4.12 अभ्यास एवं बोध प्रश्न

1. पुनरीक्षण का क्या अर्थ है तथा पुनरीक्षण क्यों आवश्यक है?
2. अनुवाद पुनरीक्षण और अनुवाद मूल्यांकन में अंतर स्पष्ट कीजिए?
3. पुनरीक्षण किन-किन स्तरों पर किया जाता है?
4. पुनरीक्षण करते समय किस प्रकार के संशोधन किए जाते हैं?
5. पुनरीक्षण में किन गुणों का होना अपेक्षित है?
6. पुनरीक्षण के लिए कुछ व्यावहारिक सूत्रों का परिचय दीजिए।
7. पुनरीक्षण के दौरान आपको किस प्रकार की समस्याएँ आईं?
8. पुनरीक्षण के दौरान प्राप्त अनुभवों को संक्षेप में लिखिए।

4.13 शब्दावली

पुनरीक्षण, समीक्षा, मूल्यांकन, भाषायी, संकल्पनात्मक (विशेष शब्दावली इकाई में दिए गए नमूना पुनरीक्षण अभ्यास में दी गई है)।

4.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008, 2012, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- कैलाशचन्द्र भाटिया, *अनुवाद कला : सिद्धांत और अनुप्रयोग*, नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन
- दिलीप सिंह, साहित्येतर पाठ का संदर्भ, *अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन*।
- दिलीप सिंह, 2013, अनुवाद की व्यापक संकल्पना, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।

इकाई 5 अनुवाद मूल्यांकन (Evaluation of Translation)

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 अनुवाद मूल्यांकन का अर्थ

5.3 अनुवाद मूल्यांकन संबंधी विभिन्न संकल्पनाएँ

5.4 अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ

5.5 अनुवाद मूल्यांकन के आधार

5.6 अनुवाद मूल्यांकन के सोपान

5.7 अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम

5.8 विषय विवेचन

5.9 सारांश

5.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

5.11 शब्दावली

5.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.0 उद्देश्य

अनुवाद मूल्यांकन नामक इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- जान सकेंगे कि अनुवाद मूल्यांकन क्या होता है और इसे कौन करता है;
- मूल्यांकन की आवश्यकता पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कर सकेंगे;
- अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ जान सकेंगे; और
- अनूदित सामग्री के मूल्यांकन का प्रयास कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपको अनुवाद पुनरीक्षण के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई और यह भी बताया गया कि अनुवाद पूरा हो जाने के बाद उसका पुनरीक्षण किया जाता है। उसके विभिन्न चरणों या सोपानों तथा पुनरीक्षण के मुख्य आधारों पर भी अपने विस्तार से पढ़ा। आपको यह भी बताया गया कि अनुवाद पुनरीक्षण किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो अनुवाद में पूरी तरह दक्ष एवं पारंगत हो। आपने यह भी अनुभव किया होगा कि पुनरीक्षण-विशेष प्रयोजन के लिए किया जाता है जबकि गुणात्मकता एवं मानकता की दृष्टि से अनुवाद को विभिन्न स्तरात्मक चरणों से गुजरना होता हैं इन्हीं में एक है; अनुवाद मूल्यांकन। अतः इस इकाई में आपको अनुवाद मूल्यांकन के बारे में बताया जाएगा। इस पाठ में दी गई विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के बाद आप अनुवाद मूल्यांकन करने में प्रयुक्त होने वाली प्रविधि और प्रक्रिया से अवगत हो पाएंगे। अनूदित कृति की सार्थकता, उपयोगिता, उपादेयता एवं महत्ता का आकलन करने के लिए मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन करते समय अनूदित पाठ की विषयगत प्रामाणिकता और प्रयुक्तिपरक औचित्य की दृष्टि से समग्र मूल्यांकन किया जाता है।

अनुवाद मूल्यांकन की संकल्पना के पीछे एक लंबी परंपरा है जो सहज बोध से चलती हुई अत्यंत जटिल प्रक्रिया में से गुजर कर आई है। अनुवाद मूल्यांकन वास्तव में अनुवाद व्यवहार प्रक्रिया का मुख्य स्रोत रहा है और शायद यह एक मात्र ऐसा विषय है जिसमें सिद्धांत का विकास न होने पर भी कभी प्रक्रियागत कमी नहीं आई

अनुवाद मूल्यांकन के पहले चरण में प्रायः यह मान लिया जाता है कि कुछ अलंकार युक्त शब्दों के आधार पर अनुवाद का मूल्यांकन हो सकता है। वास्तव में अच्छे अनुवाद की पहली शर्त यह है कि अनुवादक मूलपाठ की आत्मा को पकड़ ले और इसीलिए जब तक अनुवादक और लेखक में पूरा तादात्म्य नहीं होगा तब तक अच्छा अनुवाद संभव नहीं है। कुछ विचारकों का यह मत है कि मूलपाठ का मंतव्य समझने के बाद ही अच्छा अनुवाद आरंभ होता है। ऐसी धारणाओं की विशेषता यह थी कि इन्हें व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सकता था, न ही इस प्रकार के गुणों को अध्येता अथवा प्रशिक्षणार्थी को सिखाने का कोई साधन उपलब्ध था। इसलिए सामान्य रूप से किसी भी अनुवाद का मूल्यांकन क्षणिक प्रतिक्रिया और अनुवादेतर आधारों पर कर दिया जाता था। अतः प्रस्तुत इकाई में हम अनुवाद मूल्यांकन की विभिन्न संकल्पनाओं, पद्धतियों, आधारों तथा आयामों पर क्रमवार चर्चा के उपरांत यह स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे कि अनुवाद मूल्यांकन सफल अनुवाद के लिए क्यों आवश्यक है।

5.2 अनुवाद मूल्यांकन का अर्थ

मूल्यांकन शब्द मूल्य+अंकन से निर्मित समस्त पद है जिसका कोशगत अर्थ है-किसी वस्तु की उपयोगिता, गुण, महत्व आदि का होने वाला अंकन। पुनरीक्षण और मूल्यांकन दोनों ही अनुवाद के बाद की प्रक्रियाएँ हैं और दोनों में ही अनुवाद की जाँच की जाती है। पुनरीक्षण में जहाँ जाँच के साथ सुधार, संशोधन और संपादन भी किया जाता है वहाँ मूल्यांकन में केवल जाँच की जाती है। जाँच के बाद अनुवाद की गुणवत्ता, उसकी उपलब्धियों एवं अनुपलब्धियों पर टिप्पणी की जाती है।

5.3 अनुवाद मूल्यांकन के संबंध में विभिन्न संकल्पनाएँ

अनुवाद-मूल्यांकन के लिए अंग्रेजी में दो शब्द प्रचलित हैं-(1) ट्रांसलेशन क्वालिटी असेसमेंट (Translation Quality Assessment); और (2) ट्रांसलेशन इवैल्युएशन (Translation Evaluation)। इन दोनों शब्दों का संबंध अनुवाद की गुणवत्ता के परीक्षण से है। मूल्यांकन में यह देखा जाता है कि अनूदित पाठ मूलपाठ के स्तर का है अथवा नहीं। उसे मूलपाठ का सहपाठ माना जा सकता है अथवा नहीं। इसके साथ यह भी देखा जाता है कि मूलपाठ से अलग रखे जाने पर या स्रोतभाषा से अनभिज्ञ लक्ष्यभाषा-भाषी द्वारा पढ़े जाने पर अनूदित पाठ में वह संदेश या आशय पूर्ण रूप से मिलता है या नहीं जो मूलपाठ में मिलता है। अंग्रेजी 'असेसमेंट' और 'इवैल्युएशन' के अर्थ में अंतर मिलता है किंतु हिंदी के मूल्यांकन में इन दोनों शब्दों के अर्थ समाहित हैं।

अनुवाद के मूल्यांकन और परीक्षण के संबंध में विद्वानों में काफी मतभेद रहा है। मूलनिष्ठ अनुवाद और लक्ष्य भाषानिष्ठ अनुवाद में से कौन-सा अच्छा अनुवाद है, इस बारे में कई पद्धतियों का विकास हुआ। इन पद्धतियों को प्रभाववादी और व्यवहारवादी कहा जा सकता है। प्रभाववादी मूल्यांकन में समीक्षक या मूल्यांकन की एक 'विशेषज्ञ पाठक' के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त होती है। व्यवहारवादी मूल्यांकन में संभावित पाठकों की प्रतिक्रिया के आधार पर अनुवाद की सफलता को मापा और जाँचा जाता है। कुछ विद्वानों ने पाठधर्मी और प्रभावधर्मी नाम के दो प्रकार के मूल्यांकन माने हैं। पाठधर्मी मूल्यांकन में मूलपाठ की कसौटी बनाया जाता है और प्रभावधर्मी मूल्यांकन में अनूदित पाठ की प्रभावोत्पादकता आँकी जाती है। अर्थात् क्वालिटी एसेसमेंट सामान्यतया अनुवादक की गुणवत्ता और कौशल का निर्धारण है जबकि 'इवैल्युएशन में अनुवादक की गुणवत्ता निर्धारण के साथ अनूदित पाठ को मूलपाठ के समक्ष देखकर उसके स्तर आदि का भी मूल्यांकन है। कृष्ण कुमार गोस्वामी ने इन दोनों शब्दों में अंतर करते हुए बताया है कि पहले प्रकार अर्थात् Quality का संदर्भ सूचनापरक पाठ से होता है जबकि Evaluation सर्जनात्मक तथा ज्ञानात्मक/सूचनापरक पाठ दोनों से संबद्ध है। 'मूल्यांकन' शब्द स्वयं में ही व्यापक आयामी है तथा यह अनुवाद की मूलनि ठता और लक्ष्य निष्ठता के सवालों में उलझा रहा है। अतः मूल्यांकन के पाठधर्मी और प्रभावधर्मी पक्ष को अनुवाद की प्रभावोत्पादकता जानने के साधनों के रूप में विद्वानों ने अध्ययन का मुख्य आधार बनाया।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पुनरीक्षण अनुवाद प्रक्रिया का एक अंग है, जबकि मूल्यांकन उसके बाद होने वाली गतिविधि हैं। पुनरीक्षण में अनुवाद की जाँच के साथ-साथ उसका परि कार, संशोधन और संपादन होता है जबकि मूल्यांकन में अनुवाद की सफलता और विफलता की जाँच-पड़ताल होती है। इसमें अनुवाद की गुणवत्ता की कसौटी पर भी उसे जाँचा जाता है। मूल पाठ के संदर्भ में अनूदित पाठ के गुण-दोषों का विवेचन होता है।

5.4 अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ

मूल्यांकन के संदर्भ में अनेक पद्धतियों का विकास हुआ है। इसका मुख्य कारण था अनूदित पाठ को विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजार कर उसके गुणात्मक एवं उपलब्धिपरक पहलुओं का परीक्षण। विभिन्न पद्धतियों में परस्पर भिन्नता अधिक नहीं थी। इसी से अनुवाद मूल्यांकन की मुख्य पद्धतियों का विवरण इस प्रकार है :

(1) पुनरनुवाद आधारित मूल्यांकन

पुनरनुवाद आधारित मूल्यांकन पद्धति के अंतर्गत किसी मूलपाठ के अनुवाद का स्रोतभाषा में पुनः अनुवाद किया जाता है। इसमें अनुवादक और पुनरनुवादक अलग-अलग व्यक्ति होते हैं। पुनरनुवादित पाठ की तुलना मूलपाठ से की जाती है। इसमें त्रुटियों को पहचाना जाता है और उनका संशोधन किया जाता है। इस पद्धति से अनुवाद की शुद्धता और यथातथ्यता की जाँचकर अनुवाद की सफलता को मापा जा सकता है। यह पद्धति भाषापरक त्रुटियों के लिए उपयोगी तो है किंतु सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य में अधिक कारगर सिद्ध नहीं होती। मूलपाठ में जो सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, यह आवश्यक नहीं कि वह अनूदित पाठ में बोधगम्य और संप्रेषणीय बन सके। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी वाक्य ‘No Smoking’ का हिंदी अनुवाद ‘धूम्रपान निषेध’ हुआ और इसी का अंग्रेजी में पुनरनुवाद ‘Smoking is Prohibited’ हो जाता है। इसी प्रकार हिंदी वाक्य ‘अंदर आना मना है’ का अंग्रेजी अनुवाद ‘No admission’ हुआ और इसी का हिंदी में पुनरनुवाद ‘प्रवेश वर्जित’ होता है तो इससे हमारा उद्देश्य सफल नहीं हो पाता। ‘Strictly speaking’, ‘Truly speaking’, ‘to be honest’ आदि के लिए हिंदी में अक्सर ‘सच-सच कहें’ आदि का प्रयोग होता है, अतः अनुवाद करते समय वाक्य में इनका शाब्दिक अनुवाद उपयुक्त नहीं होगा। दूसरी ओर, हिंदी में ‘चरणामृत’ और ‘पंचामृत’ शब्द भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक रीति-रिवाजों तथा अन्य संस्कारों से अपरिचित यूरोपीय समाज के लिए अपरिचित हैं, अतः इसका अनुवाद सटीक अर्थ नहीं दे पाएगा। इस प्रकार आप देखते हैं कि पुनरनुवाद आधारित मूल्यांकन पद्धति पूर्णतया सफल मूल्यांकन पद्धति सिद्ध नहीं हो पाती।

(2) अनुक्रिया आधारित मूल्यांकन

20वीं शताब्दी के छठे दशक तक पहुँचते-पहुँचते पाठ प्रकार्य (Function of Text) को मूल्यांकन का सबसे महत्वपूर्ण आधार माना जाने लगा। इसके केंद्र में थी पाठक की अनुक्रिया (response)। फॉर्स्टर, नाइडा और टेबर ने इन्हीं आधारों को अनुवाद मूल्यांकन के लिए आवश्यक माना। इस संकल्पना की मूल धारणा यह थी कि जिस प्रकार मूलपाठ अपने वास्तविक संदर्भ के पाठकों पर प्रभाव छोड़ता है, अनूदित पाठ भी अपनी भाषा के संदर्भ में वैसा ही प्रभाव अपने पाठकों पर डाले। सैद्धांतिक दृष्टि से यह धारणा काफी तर्कसंगत प्रतीत होती है किंतु व्यवहार में यह उतनी ही असफल और दुस्साध्य साबित होती है। पहले तो किसी भी पाठक अथवा पाठक वर्ग की अनुक्रिया को मापने का कोई निश्चित साधन नहीं है, क्योंकि अनुवाद की अनुक्रिया प्रत्येक भाषा-भाषी की समसामयिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। भाषायी दृष्टि से अनुवादक समतुल्यता के आधार पर सही चयन करने में तो सफल हो सकता है किंतु भूमिका निर्वाह की पूर्ण समतुल्यता लाना संभव नहीं है। दूसरे ऐसे पाठक (वर्ग) का चयन किस आधार पर किया जाए। इतना ही नहीं दो भाषाओं के पाठक वर्गों की असमान स्थिति भी ऐसी तुलना में बाधा बन सकती है। अतः तार्किक दृष्टिकोण से संतुष्ट होते हुए भी यह प्रविधि अनुवाद का मूल्यांकन करने में कारगर सिद्ध नहीं हुईं भारतीय नाटकों में जो विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों का जो रूप मिलता है, वह अंग्रेजी में अनूदित कृतियों में संभव नहीं है। यही कारण है ‘अभिज्ञान शाकुन्तलम’ तथा ‘मनुस्मृति’ आदि के अनुवादों में कई भ्रम उत्पन्न हुए देखे गए हैं। ग्रीक नाटकों के साथ भी यह स्थिति पाई गई है। नाइडा के अनुवाद सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन के लिए संप्रेषण प्रक्रिया में सहजता, कथ्य का बोधन तथा अनुक्रिया अर्थात् पाठक वर्ग में उत्पन्न प्रभाव की समतुल्यता महत्वपूर्ण कारक हैं।

5.5 अनुवाद मूल्यांकन के आधार

पिछले पाठ्यक्रमों के अध्ययन से आपने यह अनुभव किया होगा कि अनुवाद अध्ययन का मुद्दा एक बड़ा ही जटिल, विवादास्पद तथा संवेदनशील मुद्दा है। अभी तक किसी ऐसे सुनिश्चित एवं संपुष्ट आधार की खोज अंतिम रूप से नहीं हो पाई है जिसके प्रयोग से असंदिग्ध और विभ्रांति रूप से किसी अनुवाद का मूल्यांकन किया जा सके। तथापि, कुछ विद्वानों द्वारा वर्णित आधार यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। नाइडा और टेबर ने अनुवाद मूल्यांकन के तीन आधार बताए हैं-(1) संदेश का सहज संप्रेषण; (2) पठनीयता द्वारा बोधन और (3) अनुवाद की पर्याप्तता से पाठक की अभिरुचि। ये आधार अच्छे अनुवाद की बात तो करते हैं, किंतु मूल्यांकन द्वारा अच्छे-बुरे अनुवाद में स्पष्ट भेद नहीं कर पाते, क्योंकि इन आधारों में वैज्ञानिकता और वस्तुनिष्ठता नहीं मिलती। इसके बाद इन दोनों विद्वानों ने अनुवाद मूल्यांकन के निम्नलिखित आधार प्रस्तावित किए हैं जो अनुक्रिया संबंधी प्रभाव को मापने के लिए प्रायोगिक प्रतीत होते हैं। इनके प्रकार इस तरह बताए गए हैं :

(क) क्लोज़ (cloze) परीक्षण

(ख) बोधन (Comprehension) परीक्षण

(ग) सस्वर पठन

(घ) उत्तम अनुवाद से तुलना

(क) क्लोज़ (Close) परीक्षण

अनुवाद मूल्यांकन के आधार के रूप में इसका प्रयोग तो 1953 से ही टेबर ने करना आरंभ कर दिया था। गेस्टॉल्ट मनोविज्ञान 'कलोश्ज़र' सिद्धांत के अनुसार यदि इसमें एक निश्चित संख्या के बाद जैसे पाँचवें, सातवें, नौवें आदि शब्दों को अनूदित पाठ में से निकालकर पाठक को दे दिया जाता है और उनसे रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहा जाता है। पाठक उस रिक्त स्थान पर जिस शब्द को उपयुक्त एवं सटीक समझता है उसकी पूर्ति कर देता है। इसके बाद पूर्तियों से मिलान करके देखा जाता है कि पाठक के अनुमान कितने सही हैं। इस परीक्षण के पीछे दर्शनिक आधार यह है कि यदि पाठक को संपूर्णता का आभास है तो वह उसमें पाई जाने वाली रिक्तियों को यथासंभव समीपस्थ शब्दों द्वारा स्वतः ही भर लेगा। परंतु एक अच्छी मूल्यांकन पद्धति होने के बावजूद रिक्त स्थानों की पूर्ति करते समय सही विकल्पों के चयन के अभाव तथा पाठक का मूलपाठ से संपर्क न होने के कारण यह मूल्यांकन एक पक्षीय रह जाता है। इस पद्धति से एक प्रकार की चयन अराजकता की भी आशंका हो जाती है

(ख) बोधन (Comprehension) परीक्षण

बोधन परीक्षण के अंतर्गत किसी अनूदित पाठ पर आधारित ऐसे प्रश्न बनाए जाते थे जिनसे उसमें निहित सूचना तत्वों की पकड़ (समझ) का आकलन हो सके। यदि मूलपाठ में प्रयुक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यवर्धक तथ्यों का अनूदित पाठ के माध्यम से बोध सहज रूप से होता है तो उसे अच्छा अनुवाद माना जाता है। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि प्रश्नकर्ता कौन है तथा क्या वह लक्षित पाठ का सही-सही आशय जान पाया है, या नहीं।

(ग) सस्वर पठन अथवा वाचन परीक्षण

पाठ की उपयुक्तता एवं संपूर्णता का यह आधार प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के सस्वर वाचक जैसी ही है। नाइडा और टेबर ने किसी अनूदित पाठ के सस्वर पठन अथवा वाचन को भी एक आवश्यक आधार माना क्योंकि इसमें तीन-चार लोगों से अनुवाद का सस्वर वाचन करने के लिए कहा जाता है और यह देखा जाता है कि वाचन करते समय वाचनकर्ता कहाँ-कहाँ भटकता है, हिचकता है या त्रुटियाँ करता है इससे भाषा की लय और संप्रेषणीयता अधिक सहज हो सकती है। इसमें पाठ का सस्वर पाठ, तत्पश्चात् उसमें निहित संदेश का संवाहन तथा उच्च स्वर से पाठन वास्तव में अनूदित पाठ को संप्रेषणीयता हेतु परखने के चरण हैं।

वाचन-परीक्षण की यह पद्धति सिद्धांत रूप में अच्छी लगती है किंतु व्यावहारिक रूप में लंबी प्रक्रिया है। इसमें एक व्यक्ति की राय पर निर्भर न रहकर अनेक व्यक्तियों की राय उभर आती है और उसमें भिन्नता की संभावना

रहती है। इसमें विभिन्न व्यक्तियों के अपने ज्ञान और उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का पता तो चल सकता है किंतु अनुवाद की कमियों की जानकारी नहीं मिल पाएगी और न ही अनुवाद के विभिन्न शैलीगत रूपों का पता चल पाएगा।

(घ) उत्तम अनुवाद से तुलना अर्थात् तुलनात्मक परीक्षण

किसी उत्तम अनुवाद से तुलना करते हुए अनुवाद का मूल्यांकन करना भी एक निर्णायक आधार मान लिया गया जिसके चयन के लिए कुछ सक्षम निर्णायकों की राय ले ली जाती है और इसी के आधार पर विशिष्टपाठक वर्ग से अनूदित पाठ से संबद्ध प्रश्न भी पूछे जाते हैं। उत्तम अनुवाद का चयन तथा अनूदित पाठ के साथ उसकी साम्यता का प्रश्न यहाँ महत्वपूर्ण माना जाता है।

ये सभी पद्धतियाँ उपयोगी होते हुए भी व्यावहारिक दृष्टि से अनुवाद का मूल्यांकन करने में पूरी तरह सक्षम नहीं थी क्योंकि इस संबंध में जो भी प्रयोग किए गए, वे या तो बहुत सीमित थे या बहुत कृत्रिम और जटिल। उदाहरण के लिए किसी उत्तम अनुवाद का चयन सक्षम निर्णायकों की राय से ही हो सकता है किंतु इन सक्षम निर्णायकों की वास्तविक क्षमता का निर्णय अपने में संदेहास्पद बन जाता है। इसके अतिरिक्त ये सभी मूल्यांकन पद्धतियाँ वस्तुनिष्ठ होने की अपेक्षा व्यक्तिनिष्ठ अधिक है और दूसरे, मूलपाठ से इसका कोई संबंध नहीं रखा गया जिससे जाँच करने पर सही एवं सटीक को खोज निकालने में सुविधा हो। इन पद्धतियों में बोधगम्यता की मात्रा को ध्यान में रखकर मूल्यांकन किया जाता है लेकिन अच्छे अनुवाद का मूल्यांकन मूलपाठ को बिना ध्यान में रखे सही नहीं हो सकता। इन परीक्षणों से पाठ की बोधगम्यता, प्रवाहशीलता, स्वाभाविकता आदि की जाँच तो की जा सकती है किंतु गुणवत्ता को नहीं मापा जा सकता।

इन पद्धतियों की प्रतिक्रियास्वरूप अनुवाद मूल्यांकन में जो विचारधारा विकसित हुई उसमें पहली बार मूलपाठ के महत्व को समझते हुए अनूदित पाठ का मूल्यांकन करने की विधियाँ प्रस्तावित की गईं। उदाहरण के लिए, यह सुझाव दिया गया कि मूल का विश्लेषण किया जाए तो विभिन्न अनुवादों का मूल्यपरक वर्गीकरण किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण का सबसे महत्वपूर्ण और व्यवस्थित अध्ययन जुलियाना हाउस ने किया। इस अनुवादशास्त्री ने मूलपाठ के विश्लेषण के लिए दो प्रमुख आधार माने :

(1) भाषा प्रयोक्ता; और
(2) भाषा प्रयोग।

भाषा प्रयोक्ता के अंतर्गत प्रादेशिक आधार, सामाजिक वर्ग तथा काल संबंधी तत्वों को विश्लेषित किया जाता था जबकि भाषा प्रयोग में भाषा-माध्यम, सहभागिता का स्तर, सामाजिक भूमिका और विधापरक तत्वों को आधार बनाते हुए मूल आधार पर तथा अनूदित पाठों के शैलीगत पार्श्विक तैयार कर लिए जाते थे और उनकी तुलना के आधार पर अनूदित पाठ का मूल्यांकन किया जाता था। अनुवाद व्यवहार के लगभग 200 वर्ष के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद मूल्यांकन का इतना विस्तृत और सुव्यवस्थित प्रारूप पहले उपलब्ध नहीं था किंतु इस प्रारूप में एक मूलभूत दोष इसकी व्यावहारिक उपयोगिता का था। इस प्रारूप के आधार पर मूल तथा अनूदित पाठ का शास्त्रबद्ध विश्लेषण अपने आप में ही एक जटिल समस्या थी।

अनुवाद मूल्यांकन के उभरते हुए क्षितिजों में से एक उपयोगी घटना अनुवाद दोष विश्लेषण के रूप में सामने आई इसके प्रणेता थे दो अनुवाद विशेषज्ञ-ब्रिसलिन और बैरिक। इस संकल्पना की मुख्य मान्यता कोडीकरण और विकोडीकरण की दोहरी प्रक्रिया पर आधारित थी और और इसका उपादान था पुनरनुवाद। इसे निम्नलिखित आरेख द्वारा समझा जा सकता है।

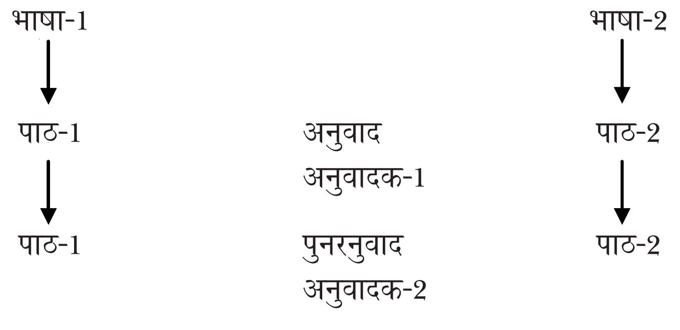

जो भाव भाषा-1 में कोडीकरण करते हुए पाठ-1 के रूप में लेखक द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं, वे विकोडीकरण करने के बाद किसी दूसरी भाषा में अनुवादक द्वारा कोडीकृत किए जाते हैं। ऐसे अनूदित पाठ में व्यक्त भावों को विकोडीकृत करते हुए वही या अन्य अनुवादक पुनः कोडीकृत कर देते हैं। फलस्वरूप मूल्यांकक के मूलभाषा के दो पाठ उपलब्ध हो जाते हैं-(1) मूलपाठ; तथा (2) पुनरनुवाद द्वारा प्राप्त पाठ। इन दोनों की तुलना करने के बाद ब्रिसलिन और बैरिक ने यह प्रस्तावित किया कि विषम तत्वों को चार वर्गों में रखा जा सकता है-(क) वृद्धि, (ख) लोप, (ग) स्थानापत्ति और (घ) संरचना विकृति। अर्थात् अनूदित पाठ में अनुवादक कुछ ऐसे अंश जोड़ सकता है जो मूलपाठ में नहीं थे या कुछ अंश छोड़ सकता है जो मूलपाठ में थे। इसके अतिरिक्त वह अनुवाद करते समय उचित शब्द के स्थान पर किसी कम उचित अभिव्यक्ति को स्थानापन्न (Substitute) कर सकता है और कभी-कभी पूरी धारणा को विकृत रूप भी दे सकता है। लेखकद्वय के अनुसार इन आधारों पर अनूदित पाठ का मूल्यांकन अच्छी तरह से किया जा सकता है। उन्होंने इस प्रक्रिया के कुछ अन्य लाभ भी बताए हैं; जैसे-

1. कोई ऐसा व्यक्ति भी अनुवाद का मूल्यांकन कर सकता है जिसे न तो अनुवाद का कुछ ज्ञान हो, न ही लक्ष्यभाषा का।
2. इस प्रविधि से अनुवाद प्रक्रिया का आंतरिक पक्ष भी स्पष्ट हो जाता है।
3. अनूद्य रचना के लिए कुछ निश्चित आधार बनाए जा सकते हैं अर्थात् किसी रचना की अनुवाद प्रक्रिया में से गुजरने से पहले ही यह देखा जा सकता है कि सामान्य रूप से किस प्रकार के अंश लोप या विकृति के शिकार हो सकते हैं और इनसे बचने के लिए पहले ही संपादन करते हुए आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं।

जैसा इस चर्चा से स्पष्ट है, इस प्रक्रिया का मुख्य बिंदु पुनरनुवाद है जिस पर हम प्रारंभ में चर्चा कर चुके हैं। यह प्रविधि आठवें दशक में इस प्रकार उभरकर आई मानो पहली बार इस धारणा को स्थापित किया गया है। किंतु यह सुखद आश्चर्य का विषय है कि लगभग 70-80 वर्ष पहले मैसूर के एक लगभग अज्ञात अनुवादशास्त्री रघुनाथराव ने बहुत पहले ही इस संकल्पना के उपयोगी पक्ष की ही नहीं उसकी सीमाओं की भी चर्चा कर दी थी जबकि परवर्ती प्रस्ताव (अर्थात् ब्रिसलिन और बैरिक की 60 वर्ष बाद की धारणा) में कोई जिक्र नहीं है। रघुनाथराव का कहना था कि पुनरनुवाद का उपयोग अनुवाद मूल्यांकन के लिए कुछ सीमा तक तो किया जा सकता है किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि पुनरनुवाद मूल कृति नहीं है और न ही मूल कृति के समकक्ष हो सकता है। यदि रघुनाथराव अनुवाद की आधुनिक विचारधारा से परिचित होते तो यह भी कह सकते थे कि इस विधि से दोहरा क्षय होता है और दुबारा प्राप्त की हुई कृति में इस संभावना का ध्यान रखा जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में पाठ-1 का अनुवाद करते समय कुछ अनिवार्य क्षय तो होगा ही, जिसके उपरांत पाठ-2 प्राप्त होगा और यदि पाठ-2 का पुनरनुवाद कराया जाए तो अनुवाद का अनिवार्य क्षय होने के बाद ही पाठ-1 प्राप्त होगा। अतः अनुवादक-1 के कार्य का मूल्यांकन करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अनुवादक-2 की स्थिति कैसी है। यह भी संभव है कि वह पाठ-2 का पुनरनुवाद करते हुए उसे मूल से बेहतर बना दे या अधिक विकृत कर दे जिसमें अनुवादक का कोई दोष नहीं है।

ब्रिसलिन और बैरिन का प्रारूप इस प्रकार न तो वैचारिक दृष्टि से नया था और न ही व्यावहारिक दृष्टि से बहुत उपयोगी। किंतु इस संकल्पना में कई उपयोगी तत्व मौजूद थे। इनका प्रयोग करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान में कुछ लघु शोध-प्रबंध तैयार किए गए (मुख्यतः डॉ. अशोक कालरा और डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी के निर्देशन में) जिनमें इस मूल संकल्पना का संशोधित रूप प्रस्तुत किया गया। संकल्पना के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया में वृद्धि, लोप, स्थानापत्ति और विकृति के संभावित दोषों को नाइडा द्वारा प्रस्तावित अनुवाद-प्रक्रिया के प्रारूप पर ढाल दिया गया अर्थात् उक्त चारों प्रकार के दोषों को विश्लेषण, अंतरण तथा पुनर्गठन के चरणों में खोजने का काम अनुवाद मूल्यांकन का मुख्य आधार मान लिया गया। यह मूल्यांकन किसी निष्कर्ष अनुवाद की तुलना के आधार पर किया जाता है। निष्कर्ष अनुवाद वस्तुतः आदर्श अनुवाद भी माना जा सकता है किंतु सर्वश्रेष्ठ या उत्कृष्ट अनुवाद नहीं। अर्थात् जिस अनुवाद के आधार पर किसी अनूदित कृति का मूल्यांकन किया जाए वह उस संदर्भ में आदर्श होगा। चाहे इसका अस्तित्व भौतिक हो अथवा मानसिक। मूल्यांकन की कसौटी को इस दृष्टि से देखने पर यह आवश्यक नहीं रह जाता कि किसी अनुवाद को अंतिम या पूर्णतया दोषहीन अनुवाद माना जाए।

इस पद्धति से मूल्यांकन काफी सरल और सहज हो सकता है। अनुवाद प्रक्रिया में प्रत्येक चरण की अपनी उपयोगिता है। जैसे-विश्लेषण के स्तर पर यह माना जा सकता है कि अनुवादक को मूलपाठ का भाषागत शैली तथा कथ्यपरक बोधन हो गया है। अतः इस चरण में यदि अनूदित रचना में कोई दोष पाया जाता है तो उसका अर्थ है कि अनुवादक को मूलपाठ समझ ही नहीं आया। वह अपने बोधन की क्षमता में होने वाली कमी को पूरा करने के लिए मूल में अनावश्यक रूप से कुछ ऐसी सूचना प्राप्त करता है, जो वहाँ है ही नहीं (वृद्धि) या किसी अंश को छोड़ देता है (लोप), या किसी अभिव्यक्ति के लिए उचित पर्याय न खोज पाने के कारण स्थानापत्ति कर देता है। मूलपाठ के बिल्कुल समझ न आने के कारण अनुवादक विकृति दोष भी कर सकता है। इस स्तर पर पाए जाने वाले अनुवाद दोषों की संख्या अधिक होने पर यह भी माना जा सकता है कि ऐसा अनुवादक अपने कार्य में इसलिए अक्षम है क्योंकि उसे मूलभाषा का बिल्कुल ज्ञान नहीं है।

अंतरण के स्तर पर उक्त दोषों के पाए जाने से यह सूचना मिलती है कि अनुवादक अपने कार्य में अभी कुशल नहीं हो पाया है। उसे दोनों भाषाओं में सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई हो रही है। मूल्यांकन की दृष्टि से ये दोष उतने गंभीर नहीं माने जा सकते जितने विश्लेषण स्तर पर पाए जाने वाले दोष हैं।

पुनर्गठन के स्तर पर यदि ये दोष पाए जाते हैं तो उससे यह सिद्ध होता है कि अनुवादक को लक्ष्यभाषा का समुचित ज्ञान नहीं है और इस कमी को अनुवादक से इतर कोई दूसरा व्यक्ति भी कर सकता है। सामान्य रूप से यह कार्य पुनरीक्षण के स्तर पर हो सकता है। इतना ही नहीं यदि पुनर्गठन के स्तर पर पहुँचते हुए अनूदित पाठ में कोई प्रयुक्ति संबंधी दोष रह गया हो तो उसे पुनरीक्षण(Vetting) द्वारा भी ठीक किया जा सकता है, अतः इस स्तर पर पाए जाने वाले अनुवाद दोष सतही माने जा सकते हैं। इस प्रकार इस प्रक्रिया में न केवल अनुवाद प्रक्रिया में होने वाले दोषों के आधार पर अनूदित कृति का मूल्यांकन हो सकता है अपितु उनके समाधान के लिए आवश्यक दिशाओं का भी निर्धारण हो सकता है। जैसे पुनर्गठन के स्तर पर पाए जाने वाले दोषों को एक संपादक भी ठीक कर सकता है, जिसे मूलभाषा का या अनुवाद का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है। यदि किसी पाठ में अंतरण के स्तर पर दोष दिखाई देते हैं तो अनूदित पाठ का ध्यानपूर्वक पुनरीक्षण करने से अच्छा पाठ तैयार हो सकता है। किंतु यदि विश्लेषण के स्तर पर अधिक दोष पाए जाएँ तो ऐसी अनूदित कृति को अनुवाद की श्रेणी से अलग कर देना चाहिए क्योंकि उसमें अच्छे अनुवाद की पहली शर्त अर्थात् मूलनिष्ठता की अपेक्षा भी पूरी नहीं होती। इस प्रकार अनुवाद के पुनरीक्षण और मूल्यांकन से अनुवादक की भाषा के स्तर, विषय ज्ञान और अनुवाद की क्षमता की जानकारी मिलती है।

5.6 अनुवाद मूल्यांकन के सोपान

अनुवाद मूल्यांकन के निम्नलिखित सोपान हैं

- मूलपाठ का उपर्युक्त आठ स्थितिजन्य आधारों पर विश्लेषण।
- स्थितिजन्य आधारों पर भाषिक आधार स्थापित करना।
- मूलपाठ के परिपार्श्व के आधार पर उसके प्रकार्यों का निर्धारण करना। अर्थात् यह पता लगाना कि कोई पाठ किस विशेष स्थिति के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है और उस विशेष स्थिति में उस पाठ की विशिष्ट अर्थवत्ता क्या थी?
- मूलपाठ के तार्किक और अंतर वैयक्तिक प्रकार्यों को स्थापित करना।
- मूलपाठ के समान अनूदित पाठ का भी विश्लेषण करना और मूलपाठ के साथ उसकी उन्हीं आधारों पर तुलना करना।
- दोनों पाठों में जो स्थितिजन्य आधारों के अंतर हैं उन्हें परोक्ष दोष मानना।
- इनसे इतर प्रत्यक्ष दोषों का निर्धारण।

इस प्रकार अनुवाद का मूल्यांकन करने पर न तो वह भावनात्मक, एकपक्षीय और तदर्थ मूल्यांकन होगा और न ही मूलपाठ से कटा हुआ अनुक्रिया पर आधारित आंशिक मूल्यांकन होगा। अनूदित कृति का इस प्रकार किया गया

मूल्यांकन मूल और अनुवाद की सर्वांगीण समतुल्यता को विशिष्ट प्रतिमानों के आधार पर प्रमाणीकृत करेगा और अनुवाद में पाए जाने वाले विभिन्न दोषों का कारण ढूँढने में भी सहायक होगा। अनुवाद मूल्यांकन का कार्य इस प्रकार एकल न होकर बहु-आयामी होता है।

5.7 अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम

अनुवाद मूल्यांकन हेतु अनेक मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं में; अनुवाद का सुयोग्य (जी.ए. मिल्लर तथा वी.जे. सेटर आदि) विद्वानों द्वारा मूल्यांकन, सांख्यिकीय सूचकों द्वारा आदर्श अनुवाद से तुलना तथा अनूदित पाठ के पाठकों की राय भी महत्वपूर्ण मानी गई है। इसके अतिरिक्त अनुवाद में अन्य व्यावहारिक पक्षों को भी जैसे जे.बी. कैरोल अनेक विद्वानों ने महत्वपूर्ण माना है ताकि अनुवाद अपने मूल उद्देश्य की पूर्ति कर सके।

अनुवाद मूल्यांकन की दृष्टि से अच्छे अनुवाद में चार गुणों का होना अनिवार्य माना गया है-(1) मूलनिष्ठता, (2) पठनीयता, (3) बोधगम्यता, (4) प्रयोजन सिद्धि। आइए इन पर क्रमवार चर्चा करें।

(1) मूलनिष्ठता

अनूदित पाठ में उन सभी सूचना तत्वों का आना आवश्यक है, जो मूलपाठ में अभिप्रेत हैं। यही मूलनिष्ठता है। मूलपाठ के कथ्य या विषय-वस्तु का अंतरण करते हुए उसकी विधा या शैली को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। प्रयुक्ति के क्षेत्र में प्रशासन, विधि, विज्ञान की अपनी शब्दावली, शैली और मुहावरा होता है। अतः उसी के अनुरूप अंतरण की अपेक्षा रहती है। शब्द या वाक्य या प्रोक्ति के स्तर पर यदि मूलपाठ को पृष्ठभूमि में रखा जाता है तो सफल अनुवाद की संभावना अधिक रहती है।

(2) पठनीयता

पठनीयता की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि अनुवाद अनुवाद न लगे, मूल लेखन जैसा प्रतीत हो। अच्छे अनुवाद की सबसे बड़ी पहचान यही है। पठनीयता का संबंध अभिव्यक्ति से है। एक कथ्य को अभिव्यक्त करने के लिए अनुवादक के पास कई विकल्प हो सकते हैं किंतु अनुवादक की सर्जनात्मक शक्ति मूलपाठ की सीमाओं से बंधी है, इसलिए वह अपनी शिक्षा, अभिरुचि और ज्ञान के कारण उनमें से किसी एक विकल्प को चुनेगा। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि उसने जिस विकल्प का चयन किया है उसका सामान्यतः लक्ष्यभाषा का विकल्प होना आवश्यक है अन्यथा वह बोधगम्य नहीं होगा। हालाँकि यह स्थिति कठिन है। यदि यह अनुवाद स्वाभाविक हो जाता है तो उसमें काफी मात्रा में बोधगम्यता और संप्रेषणीयता भी होगी।

(3) बोधगम्यता

पठनीयता और बोधगम्यता एक-दूसरे से जुड़े आयाम हैं। पठनीयता का संबंध जहाँ अभिव्यक्ति से है वहीं बोधगम्यता का संदेश से। यदि अनुवाद पठनीय होगा तो उसमें सहजता एवं स्वाभाविकता होने के साथ-साथ बोधगम्यता और संप्रेषणीयता भी होगी।

(4) प्रयोजन सिद्धि

यह तो आपने अनुवाद संबंधी चर्चा में अब तक जान लिया है कि अनुवाद कार्य एक सोदेश्य व्यापार है। अतः अनुवादक ने जिस प्रयोजन के लिए अनुवाद कार्य किया, अगर वह उसमें सफल हो जाता है तो अनुवाद भी सफल हो जाता है। लक्ष्यभाषा का पाठक अगर मूल संदेश को भलीभाँति समझ एवं आत्मसात कर लेता है तो इसका अभिप्राय यह है कि वह उसका प्रयोजन भी सिद्ध समझ जाएगा। इस दृष्टि से यह अनुवाद लक्ष्यभाषा में स्वीकार्य होने पर अपने प्रयोजन को सिद्ध कर लेता है। इस प्रकार मूलनिष्ठता, पठनीयता, बोधगम्यता और प्रयोजनसिद्धि अनुवाद-मूल्यांकन के मुख्य आयाम हैं।

इन सभी आयामों पर चर्चा के क्रम में यह भी बताना आवश्यक है कि मूलपाठ की शैली की रक्षा करना अनुवादक के लिए कठिन कार्य है। अनुवादक का व्यक्तित्व, उसकी भाषाशैली, उसकी सोच अनूदित पाठ में कहीं न कहीं आ ही जाती है, विशेषकर सर्जनात्मक साहित्य में। अतः अनुवाद कभी-कभी अनुवादक सापेक्ष हो जाता है किंतु

अनुवादक मूल्यांकन में आत्मपरकता और सापेक्ष तत्वों को स्थान न देना ही उचित होगा। दूसरे, मूलपाठ के भाव को लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप संजोना कोई सरल कार्य नहीं है। यदि अनुवादक भाषा अथवा संरचना पर ध्यान केंद्रित करता है तो भावों में व्याघात उत्पन्न होता है और भावों की अविकल पुनर्रचना करता है तो व्याकरण उसका साथ नहीं देता। ऐसी स्थिति में मूल्यांकनकर्ता का दायित्व बढ़ जाता है। इस स्थिति में मूल्यांकन की प्रविधि या पद्धति का विकास ऐसा होना चाहिए कि उसमें उपर्युक्त सभी लक्षण, आयाम, पक्ष और पहलू समाविष्ट हों जिससे कृति का समग्र मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ और प्रयोजनसिद्ध हो।

इस प्रकार अनुवाद-मूल्यांकन एक जटिल, विवादास्पद और संवेदनशील प्रक्रिया है जिसे व्यवस्थित आधार देने के लिए प्रविधियों के विकास के लिए कई प्रयास हुए, किंतु फिर भी कोई सुनिश्चित और प्रामाणिक आधार नहीं मिल पाया। वास्तव में अनुवाद एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है जिसकी पूर्ण प्रतिबद्धता मूलपाठ से है। किंतु अनुवाद के बाद अनूदित पाठ लक्ष्यभाषा का अंग होते हुए भी अपनी स्वायत्त सत्ता रखता है। मूलपाठ का सहपाठ होते हुए भी मूलपाठ से उसका संबंध टूट जाता है और वह लक्ष्यभाषा की व्यवस्था और परंपरा में पूर्णतया विन्यस्त और संयोजित हो जाता है। यही अनुवाद मूल्यांकन की सफलता है कि यह निर्णय हो सके कि अनुवाद के साथ पूर्ण न्याय हो पाया है और वह अपने आप में प्रामाणिक और सफल है।

वस्तुतः 'अनुवाद मूल्यांकन' केवल भावानात्मक दृष्टि से देखना मात्र नहीं है क्योंकि ऐसा मूल्यांकन एकांगी दृष्टिकोण वाला होगा। अनुवाद मूल्यांकनकर्ता यह परखता है कि क्या अनुवाद में मूल के भाव और अभिव्यक्ति सौष्ठव का परिरक्षण हो पाया है अथवा नहीं। अनुवाद की शब्दावली में यह परिरक्षण समतुल्यता को बनाए रखना है। जिस प्रकार अनुवाद में समतुल्यता की आधार दृष्टि लेकर अनुवाद कार्य किया जाता है उसी प्रकार मूल्यांकनकर्ता समतुल्यता के निष्कर्ष पर अनुवाद को कसता है और अनुवाद में व्याप्त दोषों का मूल खोजने का प्रयत्न करता है। अनुवाद मूल्यांकनकर्ता इस समतुल्यता को बनाए रखने के साथ-साथ अनूदित रचना को मूल रचना की सममूल्यता के प्रतिमान के आधार पर प्रमाणीकृत करने के लिए भी परखता है। सार रूप में यही कहा जा सकता है कि मूल्यांकन कार्य के अंतर्गत विषयगत प्रमाणिकता और प्रयुक्तिपरक औचित्य की दृष्टि से अनूदित सामग्री का मूल्यांकन निहित है।

अनुवाद मूल्यांकन के अनेक दूसरे आयाम भी है, इनमें अनुवाद के प्रकार्य आदि पक्ष सम्मिलित हैं। संप्रेषण व्यापार में वक्ता, श्रोता (पाठक), संदेश, संदर्भ, संहिता और संपर्क भाषिक संप्रेषण के प्रकार्य हैं तथा यह वक्ता (लेखक) अनुवादक-श्रोता (पाठक) की परस्पर अनूभूति के आधार पर चलता है। रोमन याकोब्सन और हैलिडे ने इन्हीं प्रकार्यों बोधपरक (संकल्पनात्मक) को अंतर वैयक्तिक तथा पाठपरक बतलाया है। भाषा में प्रकार्यों का भी अंतिम उद्देश्य आशय (Intent) को सफलतापूर्वक श्रोता को संप्रेषित करना ही है; अतः सी.के. ऑग्डन तथा आई.ए. रिचर्ड्स द्वारा प्रतिपादित भाषा प्रकार्य भी मूल्यांकन के लिए मानक बन जाता है। अनुवाद भाषिक प्रक्रिया ही नहीं, सर्जनात्मक और भावात्मक भी है। जुलियाना हाउस के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया में अर्थ को परखना आवश्यक है। उनके अनुसार मूलपाठ के अर्थ, विश्लेषण के लिए अनुवाद के कोशगत, संदर्भगत तथा पाठगत होता है। कृष्णकुमार गोस्वामी ने जुलियाना हाउस के उपरोक्त पाठ प्रकार्य को समझाने हेतु भाषिक और भाषेतर आधार पर पाठ-विश्लेषण के प्रारूप के माध्यम से निम्नलिखित मूल्यांकन आधार निर्धारित किया है।

भाषिक आधार	**भाषेतर आधार**	
....	भाषा प्रयोक्ता पर आधारित	भाषा प्रयोग पर आधारित
(क) वाक्य-स्तरीय	(क) भौगोलिक स्थिति	(क) माध्यम
(ख) शब्द-स्तरीय	(ख) सामाजिक स्थिति	(ख) सहभागिता
(ग) पाठ-स्तरीय	(ग) काल निर्धारण	(ग) सामाजिक संबंध
		(घ) सामाजिक दृष्टिकोण
		(ङ) विषयक्षेत्र

भाषिक आधार पर शब्द, वाक्य, पाठ से जहाँ वर्ण्य और अंतरवाक्यीय संबंधों की सूचना मिलती है, वहाँ पाठ के सामान्य और विशिष्ट गुणों की भी जानकारी मिलती है। भाषिक संरचना का यह मूल्यांकन तब तक प्रभावकारी नहीं हो पाएगा जब तक भाषेतर आधार पर भाषा-प्रयोक्ता तथा भाषा-प्रयोग के विभिन्न आयामों का विवेचन नहीं होगा।

सामान्यतः अनूदित पाठ का पाठक मूलभाषा का ज्ञाता नहीं होता है अतः मूल्यांकन एक पक्षीय तथा व्यक्तिनिष्ठ नहीं हो सकता। मूलपाठ से विलग अनुक्रियात्मक मूल्यांकन भी आंशिक मूल्यांकन ही होगा। अतः पूर्ण मूल्यांकन के लिए संभवतः पीछे वर्णित चार गुणों, मूलनिष्ठता, बोधगम्यता, पठनीयता तथा प्रयोजनसिद्धि का होना अनिवार्य है।

5.8 विषय विवेचन

अब तक की गई चर्चा के आलोक में अनुवाद मूल्यांकन के संदर्भ में यदि कुछ केंद्र बिंदुओं को पहचान पाए हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि इस मूल्यांकन संबंधी विषय विवेचन के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं :

1. अनुवाद मूल्यांकन की आधारभूत अनुवाद सैद्धांतिक संकल्पना है अनूद्यता (ट्रांसलेटेबिलिटी अनुवादपरकता, अनुवादानुकूलता, अनुवादनीयता)। अनुद्यता का अभिप्राय है अनुवाद सममूल्यता स्थापित हो सकने की वास्तविक और संभाव्य स्थिति। इस प्रकार अनुवाद मूल्यांकन अनूद्यता के आकलन पर अवलंबित है-अनूद्यता अधिक है तो अनुवाद की श्रेष्ठता संभावित है; अनूद्यता कम है तो अनुवाद की दुर्बलता की आशंका है। यह आकलन मूल्यांकन प्रक्रिया का अंतरंग है और प्रक्रिया के हर चरण में समीक्षक की चेतना पर अंकित होता जाता है।
2. मूल्यांकन प्रणाली में अनुवाद सिद्धांत के क्षतिपूर्ति नियम की विशेष भूमिका है।
3. अनूदित पाठ की मूलपाठ से तुलना अनुप्रयुक्त विज्ञान की तुलनात्मक व्यतिरेकी विश्लेषण पद्धति से होती है। यह विश्लेषण प्रोक्ति विश्लेषण से समर्थित है और तदनुसार प्रतिज्ञप्ति (प्रतिपाद्य के भाषिक अर्थ पर आधारित घटक) विश्लेषण (बृहत् स्तर-मैक्रो लेवल से संबंधित) तथा भाषा संरचना-विश्लेषण (लघु स्तर-माइक्रो लेवल से संबंधित) के अधिक्रम में संयोजित है।
4. तुलनात्मक-व्यतिरेकी विश्लेषण से हमें निम्नलिखित जानकारी मिलती है -
   (क) मूलपाठ के गठन (भाषा-प्रयोग पाठ की बुनावट) पक्ष में क्षति हुई है या संदेश पक्ष में; और वह कौन-सा अंश है जो क्षतिग्रस्त हुआ।
   (ख) अनूदित पाठ में मूल क्षति की पूर्ति हुई या नहीं। यदि पूर्ति हुई तो किस युक्ति से, और यदि नहीं हुई तो उससे पाठक को कोई हानि हुई या नहीं।
5. इन प्रक्रियाओं से मूलभूत जानकारी भी मिलती है और अनूद्यता का आकलन भी होता जाता है। इस प्रक्रिया शृंखला की तर्कसंगत परिणति है साहित्य समीक्षा की प्रभाववादी भाषा में अनुवाद का मूल्यांकन, अर्थात् अनूदित पाठ से मूलपाठ के अनुवाद संबंध का मूल्यांकन जो समीक्षा पाठ/अधिपाठ के रूप में अभिव्यस्त होता है।
6. प्रक्रिया के विभिन्न चरणों की क्रमिकता केवल प्रतीयमान है, वास्तविक नहीं। वास्तव में मूल्यांकन प्रक्रिया एक अन्विति है जिसके विभिन्न चरण उसके आयाम हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं-उनमें अन्योन्याश्रिता होती है। यह दृष्टिकोण साहित्यिक कृति की आंतरिक अन्विति के साथ संगत है।

5.9 सारांश

वास्तव में अनुवाद मूल्यांकन एक ज्ञानात्मक और अनुप्रायोगिक विधा है जिसमें अनुवाद कौशल का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें मूलपाठ के परिप्रेक्ष्य में अनूदित पाठ के गुण-दोषों का विवेचन किया जाता है। यह विवेचन अनुवाद

कार्य की निष्पत्ति से होता है जो अनुवाद संशोधन और स्तर के संवर्धन में सहायक होता है। इस दृष्टि से मूलपाठ के कथ्य की पुनर्रचना का परीक्षण ही अनुवाद मूल्यांकन है जिसमें भाषायी इकाइयों के संयोजन और सृजन में निहित गुण-दोषों की जानकारी मिलती है। अनुवाद मूल्यांकन अनूदित कृतियों के प्रति सही अर्थों में पाठक वर्ग की सहिष्णुता लाने का महत् प्रयास है और इससे अंततः अनुवाद की ही महत प्रतिष्ठा होती है।

5.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. मूल्यांकन का अर्थ बताइए?
2. स्पष्ट करें कि मूल्यांकन के लिए अंग्रेजी में किन पर्यायों का प्रयोग किया जाता है?
3. मूल्यांकन की दो प्रमुख पद्धतियाँ कौन-सी हैं?
4. नाइडा और टेबर द्वारा प्रस्तावित मूल्यांकन के आधार बताइए।
5. ब्रिसलिन और बेरिक द्वारा प्रस्तावित विषम तत्वों के मुख्य चार वर्ग कौन-कौन से हैं?
6. अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम बताइए।
7. अनुवाद मूल्यांकन की दृष्टि से अच्छे अनुवाद में किन गुणों का होना अनिवार्य है?
8. अनुवाद मूल्यांकन की अधारभूत सैद्धांतिक संकल्पना अनूद्यता के बारे में बताइए।

5.12 शब्दावली

मूल्यांकन, पुनरीक्षण, पाठधर्मी, प्रभावधर्मी, मूलनिष्ठता, लक्ष्यनि ठता, पठनीयता, बोधगम्यता, वस्तुनिष्ठता, सममूल्यता, प्रयोजनसिद्धि।

5.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- सुरेश कुमार, 2007, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा (सातवाँ संस्करण), दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, पूरन चंन्द टंडन (सं.), अनुवाद मूल्यांकन, नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, अन्नपूर्ण, ओ. प्र. प्रजापति, 2014, अनुवाद की नई परंपरा और आयाम, नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।
- कैलाशचन्द्र भाटिया, अनुवाद कला : सिद्धांत प्रयोग, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं कृष्ण कुमार गोस्वामी (सं.), अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- दिलीप सिंह, साहित्येतर पाठ का संदर्भ, अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन।
- House, Juliana, 1977, Model for Translation Quality Assessment, Verlag, TBC.
- Nida, E.A&C Taber, 1975, The Theory and Practice of Translation, Leiden, EJ. Brill.

इकाई 6 अनुवाद समीक्षा (Criticism of Translation)

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 समीक्षा और समालोचना

6.3 अनुवाद समीक्षा का स्वरूप और प्रकृति

6.3.1 वर्णनात्मक समीक्षा

6.3.2 तुलनात्मक समीक्षा

6.4 साहित्येतर विषयों की समीक्षा और सोपान

6.4.1 परिभाषिक शब्दावली की अनुवाद समीक्षा

6.4.2 अभिव्यक्ति क्षमता की दृष्टि से अनुवाद समीक्षा

6.4.3 अंग्रेजी प्रभाव की अनुवाद समीक्षा

6.4.4 साहित्येत्तर अनुवाद की दो दिशाएँ और अनुवाद समीक्षा

6.4.5 संप्रेषण और अनुवाद समीक्षा

6.5 समीक्षा और मूल्यांकन में अंतर

6.6 समीक्षा और समीक्षक

6.7 समीक्षा वैशिष्ट्य

6.8 सारांश

6.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

6.10 शब्दावली

6.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत अनुवाद अध्ययन के शिक्षार्थी जान सकेंगे कि :

- अनुवाद समीक्षा अनुवाद का गुण दोष विवेचन है;
- इससे अनुवाद की त्रुटियों का संज्ञान प्राप्त होता है;
- अनुवाद के गुणदोष विवेचन एवं त्रुटि-सुधार के फलस्वरूप अनुवादक आदर्श अनुवाद के मानकों को जान सकेंगे;
- विशिष्ट काल खंड और विशिष्ट ज्ञान क्षेत्र में अनुवाद संबंधी धारणाएँ क्या-क्या हैं;
- अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन के अंतर क्या हैं;
- मूलभाषा और लक्ष्यभाषा की व्याकरणिक संरचना, शब्दकोश, भाषाशैली तथा पाठ संबंधी असमानताएँ क्या-क्या होती हैं; तथा
- अनुवाद समीक्षा का शिक्षणात्मक महत्व भी है क्योंकि इससे अनुवाद के गुणात्मक स्तर में अपेक्षणीय सुधार आता है।

6.1 प्रस्तावना

इस खंड की प्रथम दो इकाइयों में हमने अनुवाद पुनरीक्षण तथा मूल्यांकन पर चर्चा की तथा यह पाया कि अनुवाद पुनरीक्षण और मूल्यांकन अनुवाद प्रक्रिया के महत्वपूर्ण चरण हैं तथा इनसे अनुवाद की वस्तुनिष्ठता एवं संप्रेषण में पर्याप्त सुधार होता है। प्रस्तुत इकाई में हम अनुवाद समीक्षा पर चर्चा करेंगे। अनुवाद समीक्षा तथा मूल्यांकन का भेद बतलाते हुए हम इसकी प्रकृति एवं महत्व के कारण अनुवाद समीक्षा एवं तंत्र विधा के रूप में क्यों स्थापित है, इस पर भी विचार करेंगें।

अनुवाद की बढ़ती माँग तथा उसके विकसित होते क्षेत्र को देखते हुए अनुवाद की स्तरीयता को बचाए रखने की आवश्यकता है। प्राचीन काल में अनुवाद कार्य को कम महत्व का कार्य माना जाता था। अनुवादक को सर्जक की तुलना में कम प्रतिभाषाली मानते थे। परंतु आज यह धारणा बदल चुकी है। आधुनिक समाज में अनुवादक एक गंभीर पाठक और सर्जक के रूप में स्वीकृत हैं और उस के कार्य को गंभीर माना जा रहा है।

अनुवादविज्ञान जैसे अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की एक शाखा है, वैसे ही अनुवाद समीक्षा अनुवादविज्ञान का अनुप्रयुक्त पक्ष है। इसमें अनुवाद के सिद्धांतों का अनुप्रयोग करते हुए अनूदित पाठ के गुण दोषों का विवेचन होता है। अर्थात् अनुवादक के दायित्व की पूर्ति किस सीमा तक हुई, अनूदित पाठ किन लक्षणों के कारण मूल पाठ के निकट या दूर है आदि पर विवेचन होता है।

अतः अनुवाद समीक्षा का तात्पर्य है ''मूलभाषा पाठ की तुलना में अनूदित पाठ के गुण दोषों का विवचेन।'' वास्तव में अनुवाद कार्य का अध्ययन ही अनुवाद समीक्षा है जिससे अनुवाद की गुणवत्ता और स्तरीयता का पता चलता है। अनुवाद कार्य एक कौशल है। अनुवाद समीक्षा एक ज्ञानात्मक विधा है। ये दोनों अनुवाद प्रक्रिया के समस्तरीय पहलू हैं। अपनी प्रकृति और महत्व के कारण एक स्वतंत्र विधा है। जिस प्रकार साहित्य समीक्षक के लिए साहित्य सर्जक होना अनिवार्य नहीं है, उसी प्रकार अनुवाद समीक्षक के लिए अनुवादक होना अनिवार्य नहीं है। परंतु अच्छे समीक्षक को न केवल अच्छा अनुवाद करना चाहिए अपितु अच्छे और खराब अनुवाद में भेद करने का भी कौशल होना चाहिए। अनुवाद को सफल सिद्ध करने के आधार के रूप में अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन की चर्चा की जाती है।

लंबे अर्से तक अनुवाद समीक्षा को समालोचना के रूप में ही माना जाता रहा है परंतु समीक्षा का उद्देश्य मात्र समालोचना तक नहीं है, बल्कि वह अनुवाद के स्तर-निर्धारण एवं मानकता पर भी अपनी बात रखता है। अतः यहाँ हम अनुवाद समीक्षा के परिप्रेक्ष्य में समीक्षा और आलोचना (समालोचना) के अंतर की चर्चा भी करेंगे।

6.2 समीक्षा और समालोचना में अंतर

समीक्षा और समालोचना या आलोचना को पारिभाषिक स्तर पर अंग्रेजी के 'Criticism का पर्याय माना जाता है। अंग्रेजी में 'Criticism' शब्द के साथ-साथ Review शब्द का प्रचलन है। अर्थ की दृष्टि से दोनों में अंतर पाया जाता है। Cambridge Advanced learner's Dictionary के अनुसार 'Criticism' का अर्थ है - Opinion or judgement about good or bad qualities of some thing especially book review, to consider something in order to make changes in it or study it, to give an opinion on a new book. इसमें पुस्तक की समीक्षा अर्थात् review की बात कही गई है।

Criticism और Review दोनों शब्दों के लिए हिंदी में आलोचना, समालोचना, समीक्षा, पुनर्विचार, पुनरीक्षण, मुआयना आदि शब्द कोश में उपलब्ध होते हैं। अर्थ की दृष्टि से इनमें भी सूक्ष्म अंतर पाया जाता है, जिस पर आगे चर्चा की जाएगी। अनुवाद समीक्षा की तरफ से देखें तो 'Criticism' शब्द का प्रयोग ही उचित लगता है। किसी नई पुस्तक का परिचय देना है तो Review की दृष्टि से ही देते हैं। उसमें विश्लेषण और विवचेन नहीं होता; समीक्षा में विश्लेषण होता है। Review का क्षेत्र सीमित है जबकि 'Criticism' का क्षेत्र विस्तृत है।

समीक्षा और समालोचना दोनों शब्द साहित्य से संबंधित हैं। समीक्षा का कोशीय अर्थ है 'अच्छी तरह देखना', 'जाँच करना', 'सम्यक ईक्षा या ईक्षणम्' । अर्थात् किसी वस्तु, रचना या विषय के संबंध में सम्यक ज्ञान प्राप्त करना

उसके ऐतिहासिक, संदर्भपरक तथा समकालिक प्रासंगिक पक्षों को व्यावहारिक कसौटी पर आँकना तथा इसके प्रत्येक तत्व का विवेचन करना समीक्षा है। अनुवाद समीक्षा अनुवाद सिद्धांत का अनुप्रयोगात्मक पक्ष है । मूल पाठ की तुलना में अनूदित पाठ के गुण दोषों का विवेचन करना ही ''अनुवाद समीक्षा'' है।

आलोचना शब्द (आ-उपसर्ग) 'लुच्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'देखना'। समीक्षा और आलोचना दोनों का अर्थ 'देखना, परखना' ही है। सम्यक् प्रकार से देखने में वस्तु या कृति का प्रभाव, आस्वाद, उसकी व्याख्या और उस का शास्त्रीय तथा नैतिक मूल्यांकन सभी बातें आ जाती हैं। सामान्यतः आलोचना को रचनाकार और कृति दोनों के गुण दोषों की परख या परीक्षा करने वाला शास्त्र माना जाता है। यह कहा जाता है कि आलोचना कृति की उपादेयता अथवा अनुपादेयता पर प्रकाश डालती है। अर्थात् आलोचना का कार्य केवल उत्तमोत्तम बातों को बताना, सच्चे और नए विचारों को उत्पन्न करना है। इस उद्देश्य के साथ आलोचना का कार्य कवियों एवं लेखकों के गुण दोषों का विवेचन करना, आदर्शों और सिद्धांतों को बताना भी है। यही आलोचना का मुख्य उद्देश्य है। समालोचना शब्द को भी हिंदी में आलोचना के पर्याय के रूप में प्रयोग करते हैं। समालोचना शब्द सम् + आङ् + लोचन् से बना है, जिस का अर्थ है 'सम्यक रूप से देखना'। इस दृष्टि से समीक्षा का व्यापार क्षेत्र काफी व्यापक हो जाता है, जहाँ कृति या साहित्यिक उपादान को नजदीकी से जाँचा-परखा जाता है। अनुवाद समीक्षा के अंतर्गत अनूदित रचना के गुणदोषों का विवचेन मूल कृति से तुलना करते हुए किया जाता है। अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन अंतरभेद भी इस इकाई में अन्यत्र स्पष्ट किया जाएगा।

समीक्षा और समालोचना के बीच में अंतर इस प्रकार भी समझा जा सकता है।

- समीक्षा में अनूदित कृति का विवचेन और विश्लेषण होता है। समालोचना में सम्यक व्याख्या होती है।
- अनुवाद समीक्षा में निश्चित प्रक्रिया का होना अनिवार्य नहीं है। वैसे ही समालोचना के लिए भी निश्चित प्रक्रिया का होना अनिवार्य नहीं।
- अनुवाद समीक्षा समीक्षक से संबंधित नहीं है। समालोचना आलोचक से संबंधित है।
- समीक्षा में गुण-दोषों का विवेचन होने से अनुवाद की स्तरीयता बढ़ती है। समालोचना में मौलिक स्थापनाओं की प्रधानता होती है।
- समीक्षा विश्लेषण प्रधान है। समालोचना विमर्श प्रधान है।
- अनुवाद समीक्षा में तर्क का कोई स्थान नहीं है। समालोचना तार्किक आधार पर होती है।
- अनुवाद समीक्षा किसी कृति के रचना काल और सर्जना में प्रयुक्त विभिन्न साधनों पर भी नजदीकी से दृष्टि डालती है। यह रचनाकारों के दृष्टिकोण और अनूदित कृति की पृष्ठभूमि में निहित को भी परखती है। 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' के अनुवादों, उमर खैय्याम की रूबाइयों तथा रामचंद्र शुक्ल द्वारा किए गए अनुवादों की समीक्षा से ये पक्ष अधिक साफतौर पर हमारे सामने आ जाते हैं। भारतीय भाषाओं में कामायनी के अनुवादों की समीक्षा का अध्ययन करने से भी अनेक पक्ष स्पष्ट हो जाते हैं।

6.3 अनुवाद समीक्षा का स्वरूप और प्रकृति

अनुवाद समीक्षा को अपनी प्रकृति और स्वरूप के आधार पर एक स्वतंत्र विधा के रूप में देखा जा रहा है। अनुवाद प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरण होने से यह अनुवाद का अनुप्रायोगिक पक्ष है, अतः अनुवाद समीक्षा द्वारा अनुवाद की और अनुवादक की स्तरीयता को बढ़ाया जा सकता है। सुरेश कुमार ने अपनी पुस्तक 'अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा' में अनुवाद समीक्षा के स्वरूप चर्चा करते हुए कहा कि अनुवाद समीक्षा के लिए मूलपाठ तथा उसके अनुवाद का चयन अर्थात् पाठ युगल की आवश्यकता है। प्रक्रिया के अंतर्गत मूलभाषा पाठ के विश्लेषण में मूल उद्देष्य या अभिप्राय, भाषा प्रकार्य, अर्थ व्यंजना, प्रतिपाद्य, प्रयुक्ति, भाषा शैली, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशेषता आदि को लिया जाता है। साथ ही पाठक वर्ग को भी जोड़ा जा सकता है। इस दृष्टि से मूल पाठ तथा अनूदित पाठ की विस्तृत तुलना और असमान बिंदुओं पर व्यतिरेकी अध्ययन भी प्रतिपाद्य रहता है। दोनों पाठों के प्रभावों के बीच का अंतर भी देखा जाता है। इस प्रकार हम अनुवाद समीक्षा के स्वरूप को देख सकते हैं।

समीक्षा का मुख्य भाग विश्लेषण का होता है और मूल्यांकनपरक निष्कर्ष गौण रूप में व्यक्त होता है। इस दृष्टि से समीक्षा को अनूदित कृति के गुणदोषों का विवेचन और गुणावगुणों का निरूपण भी माना जाता है। श्रेष्ठ अनुवाद के मानक भी स्थापित होते हैं। अनुवाद समीक्षा अनुवाद कौशल का मूल्यांकन है। यहाँ अनुवादक तथा समीक्षक दोनों ही अलग-अलग भूमिका का निर्वहन करते हैं; परंतु दोनों की भूमिका अनुवाद को व्यवहारपरक तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने में सहायक होती है।

अनुवाद समीक्षा के लिए समीक्षक में प्रतिभा और कल्पना के गुण आवश्यक है जिससे वह अनुवाद सिद्धांत के प्रासंगिक पक्षों का अनुवाद समीक्षा के लिए उचित रूपेण प्रयोग कर सके। इसमें स्वाभाविक रूप से अनुवादक की व्यक्तिनिष्ठता भी जुड़ जाती है। इस प्रकार समीक्षा में अनुवादक के व्यक्तिपरक और निर्वैयक्तिक भाषा-पक्षों के बीच संतुलन रहता है। इस तरह अनुवाद समीक्षा के स्वरूप और प्रकृति द्वारा अनुवाद के क्षेत्र में कई दिशाओं या आयामों को देखते हुए अनुवाद सिद्धांत की व्यावहारिक परिणति की समीक्षा की जाती है।

अनुवाद समीक्षा के दो प्रकार हैं - साहित्यिक पाठ की अनुवाद समीक्षा और साहित्येत्तर पाठ के अनुवादों की समीक्षा। साहित्यिक पाठ की अनुवाद समीक्षा के भी दो आयाम हैं-वर्णनात्मक और तुलनात्मक। वर्णनात्मक आयाम में मूलपाठ के एक अनुवाद की समीक्षा की जाती है। यह द्विपक्षीय है। जैसे-हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद। तुलनात्मक आयाम में मूलपाठ के कम से कम दो अनुवादों की समीक्षा होती है। यह त्रिपक्षीय है। एक ओर मूलपाठ से तुलना और दूसरी ओर दूसरे अनुवाद से तुलना। जैसे हिंदी से अंग्रेजी और तेलुगु या अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद। सुप्रसिद्ध भारतीय एवं विदेशी कृतियों से एकाधिक भाषाओं के अनुवादों की समीक्षा इस विधा में आती है। इस स्थिति को निम्नानुसार आरेख द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है :

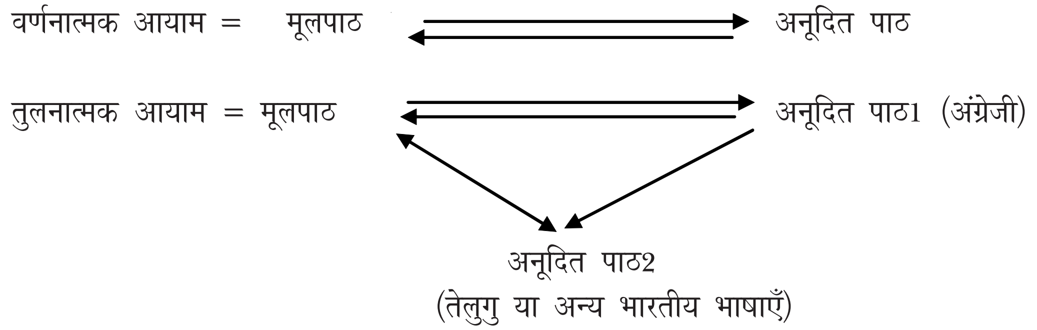

आरेख सं. 6.1

आइए अब समीक्षा के इन दोनों रूपों पर चर्चा करते हैं।

6.3.1 वर्णनात्मक समीक्षा

जैसा कि शीर्ष से ही अभिव्यक्त होता है; इसमें मूलपाठ से अनुवाद का मिलान करते हुए समीक्षा की जाती है। स्रोतभाषा के द्वारा अभिव्यक्त विचारों, भावों तथा संवेदनाओं की रक्षा करते हुए कविता को लक्ष्यभाषा में पुनःसृजित करता है। संरचना और शिल्प दोनों स्तरों पर मूल्यांकन किया जाता है। उदाहरण के लिए हम 'कामायनी' के अंग्रेजी अनुवाद का एक पद्य देखेंगे। साथ में उसकी समीक्षा करने का प्रयास किया गया है। 'कामायनी' महाकाव्य के प्रथम सर्ग 'चिंता' (Reflection) की प्रथम पंक्तियों का जो अनुवाद किया है, उस की समीक्षा इस प्रकार है।

मूल : हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरूष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह

अंग्रेजी अनु : Upon the Himalaya's lofty peak
In the cool shade of an overhanging cliff

A person sat who with wet eyes surveyed
The flowing current of The Flood of Doom. (B.N. Sahani)

इस उदाहरण में अनुवादक ने विदेशी भाषा अंग्रेजी की प्रकृति के अनुरूप ही अनुवाद प्रस्तुत किया है। मूल तथा अनुवाद दोनों में आदि मानव की सृष्टि भारत में होने की ओर संकेत किया गया है। मूल के 'एक पुरूष' का अनुवाद 'A person' करके अनिश्चय की भावना को अनुवादक ने मूल लेखक की भाँति ही व्यक्त करने की चेष्टा की। 'शिला' का अनुवाद 'over hanging cliff' तथा 'देख रहा था' का अनुवाद 'surveyed' किया गया है। सामान्य रूप में 'surveyed' शब्द का 'जाँच' या 'सर्वेक्षण' के लिए प्रयोग होता है। लेकिन यहाँ 'surveyed' का उपयोग 'चारों ओर देख रहा था' के भाव को मजबूत करने के लिए किया। उसी प्रकार 'प्रलय प्रवाह' का अनुवाद 'The flowing current of the Flood of Doom' किया गया। इससे 'प्रलय प्रवाह' की सर्वविनाषकारी शक्ति की ओर संकेतित करने के लिए अनुवादक ने अंग्रेजी भाषा की संरचना को ध्यान में रखकर प्रयोग किया। इस प्रकार अनुवादक की भावुकता और भाषा पर उसके अधिकार दोनों का पता चलता है। अनुवादक द्वारा स्वयं भारतीय होने के कारण भारतीय संस्कृति, परिवेश आदि को सृजित करने का यथासंभव प्रयास किया हुआ दिखता है। एक अन्य उदाहरण गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाि त 'रामचरितमानस' के अंग्रेजी अनुवाद के अंश के एक अन्य उदाहरण रूप में द्रष्टव्य होगा।

बंदउँ गुरू पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु, वचन रबि कर निकर।।

I bow to the lotus feet of my Guru, who is an ocean of mercy and is no other than Sri Hari Himself in human form, and whose words are sunbeams as it were for dispersing the mass of darkness in the form of gross ignorance.

यहाँ नरहरि का लिप्यंतरण 'Sri Hari' करते हुए आगे 'Himself in human form' कहा है और पदकंज के लिए सामान्यतः प्रयुक्त Lotus feet ही रखा गया है। यह lotus feet विदेशी पाठकों के लिए कई बार बोधगम्य नहीं हो पाता। अनुवाद गद्यात्मक है तथा विशदूता-वर्णन से भाव व्यक्त किया गया है। दूसरी पंक्ति के भाव को शाब्दिक Sunbeam तथा महामोह को Mass of darkness द्वारा अनूदित किया गया है। यहाँ मूल की लय तो नहीं है परंतु कथ्य की रक्षा की गई

6.3.2 तुलनात्मक समीक्षा

तुलनात्मक समीक्षा में एक मूलपाठ और एकाधिक अनुवादों को आधार बनाया जाता है। इसमें एकाधिक अनुवाद दो स्वदेशी भाषाएँ या एक स्वदेशी और दूसरी विदेशी भाषा के रूप में भी हो सकती हैं। मूलपाठ के साथ दोनों अनूदित पाठों का तुलनात्मक अध्ययन होता है। तुलनात्मक समीक्षा त्रिकोणीय है। इस तरह के विभिन्न अनुवादों को तुलनात्मक दृष्टि से देखते हुए उसकी उपलब्धियों और सीमाओं का विश्लेषण किया जाता है। इस आयाम के उदाहरण के रूप में हमने 'कामायनी' काव्य के अंग्रेजी और तेलुगु अनुवादों को लिया है। एक अनुवाद विदेशी भाषा का तो दूसरा अनुवाद द्रविड़ भाषा तेलुगु का है।

उदाहरणः

1) आनंद सुमन सा विकास हो (मूल पृ. 43) विकसिंचिन आनंद सुमनमदि
1a) Whose happiness hath blossomed like a Bloom.

कामायनी के 'लज्जा' (अवरोधं-तेलगु) 'Modesty'(अं.)) सर्ग से यह पंक्ति ली गई है। लज्जा श्रद्धा को अपना परिचय देते हुए तरूणी बननेवाली बालिका पर लज्जा का असर कैसे होता है यह बताते हुए ये शब्द कहती है। मूल का आशय है कि तरुणी बननेवाली बालिका के उन नेत्रों में आनंद सुमन-सा विकसित होता है। तेलुगु के अनुवाद में तुलना नहीं आई है लेकिन मूल का आशय प्रकट हो गया है। 'सुमनमदि (सुमना है वह) कहकर निश्चयार्थ भाव प्रकट किया गया है।

अंग्रेजी अनुवाद में तुलना भी प्रस्तुत है और मूल का भाव भी प्रकट हो रहा है।

2) समाधि सा रहा खड़ा
2a) राज गृहमु रूपोंदे समाधिगा (तेलुगु) (पांडुरंगा राव)
2b) Stood like a monumental Sculpture (B.L. Sahani)

कामायनी के 'निर्वेद' (आप्यायं (ते) Non-Attachment (अं)) सर्ग से यह पंक्ति ली गई है। मनु द्वारा सारस्वत नगर के योद्धाओं के साथ संघर्ष के पश्चात उस नगर की परिस्थिति का वर्णन करते हुए प्रसाद ने राजभवन की दशा को इन शब्दों में प्रकट किया है। राजचिह्नों की चहल-पहल के अभाव में वह भवन समाधि-सा खड़ा दृष्टिगत हो रहा था। तेलुगु अनुवादक आई पांडुरंग राव ने 'राज गृहमु रूपोंदे समाधिगा' (राजगृह ने समाधि का रूप धारण किया है) कहकर मूलरूप के आशय को स्वतंत्र रूप में व्यक्त किया है। अंग्रेजी अनुवादक बी. एल. साहनी ने अनुवाद में तुलना तो प्रस्तुत की है, परंतु समाधि के लिए monumental sculpture अनुवाद मूलभाव के निकट नहीं है। एक और उदाहरण द्रष्टव्य है।

3) आह वह मुख ! पश्चिम के व्योम बीच जब घिरते हो घनश्याम
अरुण रवि-मंडल उन को भेद दिखाई देता हो छविधाम

पश्चिमाद्रि पयि नील जलदमुलु गुमिकूडगा भेदिंचुचु वानिनि
वेडलु अरुण रवि मंडलमुन शोभिल्लु चुन्नदा मुखमंडल रुचि (पांडुरंगा राव)

Ah, that visage! when in the western sky,
Dark, sable clouds do congreate in crowds,
The golden radiance of setting sun
Empierces them and the whole scene revels
The House magnificent of Beauty bright. (B.L. Sahani)

ये पंक्तियाँ 'कामायनी' के श्रद्धा (आह्लादं (ते) 'Shradha' (अं)) सर्ग से उद्धृत गई हैं। जलप्रलय के शांत होने के पश्चात समुद्र तट पर तरूण तपस्वी जैसे बैठे मनु के सम्मुख श्रद्धा के उपस्थित होने पर उस के अलौकिक सौन्दर्य के अवलोकन से आश्चर्यचकित मनु की अनुभूति के वर्णन के रूप में प्रसाद ने श्रद्धा के मुख का यह बिंब चित्रित किया है। पश्चिम व्योम में श्यामघनों से परिवृत्त अस्तादिगामी अरूण रवि मण्डल के साथ श्रद्धा के मुख मंडल का बिंब प्रस्तुत करने में कवि की कला अपूर्व है। तेलुगु के अनुवाद में यद्यपि मूल में चित्रित आश्चर्यान्वित दिग्भ्रांति का भाव उपस्थित नहीं किया गया तथापि उत्प्रेक्षा के रूप में इस का प्रभावात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया। अंग्रेजी अनुवाद में मूल की तरह ज्यों-का-त्यों बिंब समाने आता है।

उपरोक्त उदाहरणों की समीक्षा से हमें यह ज्ञात होता है कि हिंदी से अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय अनुवाद सफल बनता है। हिंदी से विदेशी भाषाओं में अनुवाद करते समय अनुवादक को परिश्रम करना पड़ता है। अनुवादक मूल संस्कृति और भाषा की गंध लाने के लिए बहुत कुछ प्रयास करता है। यहाँ तेलुगु के अनुवादक और अंग्रेजी के अनुवादक दोनों भारतीय हैं। प्रभावधर्मी दृष्टि से तेलुगु अनुवाद पाठकों पर ज्यादा प्रभाव डालता है, अंग्रेजी अनुवाद अपेक्षाकृत कम, क्योंकि अनुवादक की सीमाएँ, भाषिक संरचना, संस्कृति, समाज, शैली आदि भी उसके साथ देखना पड़ता है। अंग्रेजी अनुवादक ने भी भरपूर प्रयास किया। अंग्रेजी भाषिक संरचना के अनुसार और समतुल्यता सिद्धांत के आधार पर अंग्रेजी अनुवाद को सफल ही कह सकते हैं। तुलनात्मक समीक्षा की दृष्टि से तेलुगु अनुवाद ज्यादा प्रभाव और अंग्रेजी अनुवाद कम प्रभाव छोड़ता है। तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा में शेक्सपीयर के 'Merchant of Venice' के भारतेंदु हरि चंद्र तथा रांगेय राघव द्वारा किए गए ''दुलर्भ बंधु' तथा 'वेनिस का सौदागर'' हिंदी अनुवाद भी द्रष्टव्य हैं। भारतेंदु ने जहाँ हिंदी के भाषिक तत्वों के अनुरूप अनुवाद किया है वहीं पात्रों, घटनाओं की संस्कृति के रचे-बसे अभिधान हैं। वेनिस का वंशपुर तथा क्रूर और बलशाली हरक्यूलिस को क्रूर-मानसिंह आदि के सांस्कृतिक परिवेश में पात्रों का स्थानीकरण किया गया है जो पाठक की रुचि तथा ग्राह्यता के अनुरूप हैं। इसी प्रकार रांगेय राघव के अनुवाद में समय का परिवर्तन परिलक्षित होता है। अतः पात्रों के नाम, स्थान तथा अन्य अभिव्यक्तियों के नाम नहीं बदले गए हैं, अपितु पाद-टिप्पणियाँ देकर अर्थ को स्पष्ट

करने का प्रयास किया गया है। तार्किकता तथा वैचारिकता प्रधान अनुवाद में रांगेय राघव ने घटनाओं की कालक्रमिकता को भी बनाए रखा है; और सांसारिक सभ्यता एवं आडंबर को ओजपूर्ण शैली में व्यक्त किया है।

इस प्रकार साहित्यिक पाठों की समीक्षा देखने के बाद हम आगे साहित्येतर पाठों की समीक्षा पर विचार करेंगे।

6.4 साहित्येतर विषयों की समीक्षा और सोपान

अखिल भारतीय स्तर पर कामकाज की भाषा के रूप में, हिंदी के विकास में अनुवाद एक अनिवार्यता बनकर उभरा। भारत में यही से साहित्येतर अनुवाद की बहुआयामी दिशाएँ खुलनी शुरू हुई। पूरे विश्व में अनुवाद सिद्धांत के प्रमुख प्रारंभिक चिंतक साहित्यिक अनुवाद के स्वरूप, प्रकृति प्रक्रिया और समस्याओं पर ही विचार करते हुए दिखाई पडते हैं इसलिए दशकों तक अनुवाद की सैद्धांतिक पीठिका साहित्यिक पाठ से संबंधित समस्याओं को ही केंद्र में रखकर तैयार की जाती रही है। यहाँ यह स्पष्ट दिखाई देता है कि अनुवाद सिद्धांत के प्रणेता साहित्य के मर्मज्ञ थे या स्वयं साहित्य सर्जक। लेकिन आज अनुवाद की परिभाषा बहुत कुछ बदल चुकी है, क्योंकि आज विश्व संप्रेषण का एक बहुत बडा अंश अनुवाद पर टिका हुआ है। अतः आज भी यदि हम अनुवाद के परिप्रेक्ष्य को मात्र साहित्यिक अनुवाद (Translation of Creative Writing) तक ही सीमित करके रह जाएंगे तो भाषिक, सामाजिक और प्रकार्यगत उन स्थितियों से विलग हो जाएंगे जिन में भाषा अपनी विभिन्न भूमिकाओं के साथ अलग-अलग रंग और तेवर में हमारे बीच स्थित है।

पिछले कुछ दशकों मे अनुवाद ने एक आधुनिक शास्त्र के रूप में अपनी पहचान बनाई इस संदर्भ में साहित्यकार ही नहीं बल्कि भाषाविज्ञानी, सूचना विशेषज्ञ, तर्कशास्त्री और अर्थशास्त्रियों जैसे विभिन्न ज्ञान क्षेत्र के लोगों ने भी विचार प्रारंभ किया। इस तरह अंतर विद्यावर्ती के रूप में साहित्य से इतर सामग्री को भी महत्व देने लगे और इनके अनुवाद कार्य को गंभीरता से देखने की दृष्टि भी उभरी। इस प्रकार साहित्येतर पाठ की अनुवाद प्रणाली और प्रक्रिया पर साहित्यिक अनुवाद की प्रचलित प्रणाली और प्रक्रिया से भिन्न स्तर पर बातचीत शुरू हुई साहित्येतर पाठ की समीक्षा के संदर्भ में भी मंथन शुरू हुआ। सामाजिक उपादेयता की दृष्टि से भाषा विज्ञानियों ने उसे उपनिवेशवादी शासन से मुक्त करके देखना शुरू किया, क्योंकि आज वैश्वीकरण भूमंडलीकरण के दृष्टिकोण से हर संदर्भ में चर्चा चल रही हैं। आधुनिक समाज उपभोक्ता सापेक्ष है, (Consumer oriented) इसलिए आज अनुवाद भावपरक पाठ (Emotive text) से तथ्यपरक पाठ (Factual / Informative text) की ओर उन्मुख हुआ है। इससे हमारी जरूरतें भी बढ़ी और बदली हैं। सामाजिक और आर्थिक ढ़ाँचा भी बदला। नित नई संकल्पनाएँ, नए विचार और ज्ञान विभिन्न भाषाओं में प्रवाहित होने लगा है। जिसके अनुवाद करने के लिए निरंतर प्रयास हो रहे हैं। आज साहित्यिक अनुवाद की अपेक्षा साहित्येतर अनुवाद को महत्व मिलने लगा है। सहित्येतर पाठ के संदर्भ में रॉबर्ट एडम्स का कहना है कि "अब अनुवाद जैसे ज्ञान क्षेत्र को साहित्यिक सामग्री तक सीमित नहीं रखा जा सकता। साहित्येतर विषयों के क्षेत्र और विश्व संपर्क के अनंत मार्ग खुल गए हैं।"

साहित्य पाठ के संदर्भ में अनुवाद समीक्षा के बिंदुओं पर हम पहले चर्चा कर चुके है। इस संदर्भ में सुरेश कुमार का कहना है कि अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन में पाठ केंद्र में होता है। यह पाठ साहित्यिक भी हो सकता है या साहित्येतर भी। अतः हम मूलभाषा और लक्ष्यभाषा के पाठ के शब्दकोश तथा व्याकरण और भाषाशैली एवं पाठप्रारूप संबंधी असमानताओं का समीक्षात्मक अध्ययन करते हैं।

दिलीप सिंह ने अनुवाद समीक्षा के अंतर्गत साहित्येतर पाठ की अनुवाद समीक्षा करने के लिए कुछ बिंदु या सोपान निर्धारित किए हैं। इन बिंदुओं को निम्न प्रकार देख सकते हैं।

1. पारिभाषिक शब्दावली की अनुवाद समीक्षा
2. अभिव्यक्ति क्षमता की दृष्टि से अनुवाद समीक्षा
3. अंग्रेजी प्रभाव की अनुवाद समीक्षा
4. साहित्येतर अनुवाद की दो दिशाएँ और अनुवाद समीक्षा
5. साहित्येतर अनुवाद की समीक्षा - पाठपरक

6. साहित्येत्तर अनुवाद की समीक्षा - प्रक्रियापरक
7. संप्रेषण और अनुवाद समीक्षा

अब इन बिन्दुओं का विस्तार उदाहरणों के साथ देखेंगे।

6.4.1 पारिभाषिक शब्दावली की अनुवाद समीक्षा

पारिभाषिक शब्दावली की अनुवाद समीक्षा करते समय समीक्षक को विषय का सम्यक ज्ञान होना चाहिए। अनुवादक को भी विषय के साथ-साथ दोनों भाषाओं का सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान होना आवश्यक है। अर्थ ग्रहण, पर्याय निर्धारण, पुनर्रचना, शब्द निर्माण आदि स्तरों पर समीक्षक समीक्षा कर सकता है। इन धरातलों पर अनुवादक की दक्षता और कुशलता दिखाई देती है।

उदाहरण के लिए, 'Petrology' का अनुवाद 'पेट्रोल विज्ञान', 'Labour Room' का अनुवाद 'श्रमिक कक्ष' करने से अर्थ का अनर्थ होता है, जब कि सही अनुवाद 'शैलिकी' (Study of origin & structure of rocks) तथा 'प्रसूति गृह' होता है। ऐसे ही 'Snow/ice', 'बर्फ', अंग्रेजी में बर्फ का अनुवाद यदि संयंत्र जमा हुआ बर्फ हो, तो Ice और ऊँचे पर्वतों या अत्यंत शीतावस्था में प्राकृतिक हिमपात यानी Snow का प्रयोग होता है; हिंदी में भी बर्फ/हिम विशेष संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं। लेकिन प्रायः बर्फ का प्रयोग होता है।

General	-	सामान्य/आम/सार्वजनिक/मुख्य/प्रधान/महा/जनरल आदि
Electricity	-	बिजली/विद्युत/तडित/दामिनी
AIR	-	आकाशवाणी/देववाणी/ऑल इंडिया रेडियो
Open	-	विवृत्त/खुला
Parliament	-	संसद/परिषद्/न्यायालय/धार्मिक संस्था/धर्म सम्मेलन
Poison/ venum/toxins	-	विष/जहर/आविष

6.4.2 अभिव्यक्ति क्षमता की दृष्टि से अनुवाद समीक्षा

साहित्येतर पाठ में अभिव्यक्तियों का प्रयोग प्रयुक्ति के अनुसार होता हैं। वार्ताक्षेत्र, वार्ता प्रकार और वार्ताशैली के अनुसार देखा जाता है। आज के बदलते परिवेश में भाषायी दायित्वों और विकसित होते व्यवहार क्षेत्रों को देखते हुए क्या यह कहा जा सकता है कि किसी भाषा में साहित्य सृजन बड़ी मात्रा में हो रहा है जबकि भाषा व्यावहारिक भाषा के रूप में ही अपना विकास पाती है। यानि जीवन के हर क्षेत्र में प्रयुक्त होकर ही भाषा का विकास होता है। आज भारतीय भाषाएँ अपने-अपने राज्यों की राजभाषाएँ हैं। फिर भी इन्हें अपने ही प्रयोगक्षेत्र में सम्मान क्यों नहीं मिल रहा है? अभिव्यक्ति क्षमता, संप्रेषणीयता और प्रयोजनमूलकता पर उँगली उठाने में संकोच नहीं करते। अंग्रेजी के साथ इन की तुलना करते हैं। अनुवादनीयता और अनुवाद समीक्षा की सैद्धांतिक प्रणाली के अनुप्रयोग द्वारा विभिन्न क्षेत्रों की हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का स्वरूपगत विश्लेषण कर सकते हैं। हम हिंदी अंग्रेजी अनुवादों को उदाहरण के रूप में देख सकते हैं।

1)	मूल	:	The judegement is reserved
	अनर्थ	:	निर्णय आरक्षित किया जाता है।
	प्रस्तावित	:	निर्णय बाद में दिया जाएगा।
2)	मूल	:	The court was seized of the matter
	अनर्थ	:	न्यायालय ने उस पदार्थ को ग्रहण कर लिया।
	प्रस्तावित	:	यह विषय न्यायालय के विचाराधीन था।
3)	मूल	:	Action
	अर्थ	:	कार्रवाई (हिंदी में)/ चर्या (तेलुगु में)/कारजवाई (प0)

4) मूल	:	Approval
अर्थ	:	अनुमोदन (हिंदी)/ स्वीकृति मंजूरी आमोदन (तेलुगु)

इन सब उदाहरणों में विशिष्ट प्रयुक्तिपरक अर्थ ही अनुवाद में अपेक्षणीय है।

6.4.3 अंग्रेजी प्रभाव की अनुवाद समीक्षा

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद निश्चित अवधि में अपनी भाषाओं के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया संपन्न की जानी थी। अवधि की सीमा के कारण मूल भाषा अंग्रेजी के सहारे अनुवाद के माध्यम से हम अपनी भाषाओं के प्रयोजनमूलक विस्तार कार्य में संलग्न हुए। इसका प्रभाव हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं पर भी पड़ा। कैलाशचंद्र भाटिया का कहना है 'क्या हम भूल गए है कि भारतीय भाषाओं के बिना पूर्ण स्वराज्य का सपना अधूरा है। स्वतंत्रता के साथ हमारा सारा कार्य भारतीय भाषाओं में होना चाहिए था'। बैकिंग अनुवाद के संदर्भ में वे कहते है कि 'हिंदी अंग्रेजी की तुलना में कहीं अधिक समर्थ है, क्योंकि इस में अंग्रेजी के एक शब्द के लिए एकाधिक पर्याय उपलब्ध है। जैसे - 'Credit' के लिए साख, उधार, लेनदेन आदि'। अन्य विद्वानों के मतानुसार अनुवादक में यदि अनुवाद कौशल उत्पन्न किया जाए तो वह सामान्य भाषा और विषय ज्ञान के सहारे भी साहित्येतर क्षेत्र में अच्छा अनुवाद कर सकता हैं। अनुवाद समीक्षा द्वारा प्रभाव को पहचाना जा सकता है। हिंदी-तेलुगु और हिंदी-अंग्रेजी के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं :

हिंदी	**तेलुगु**
उपन्यास	भाषण (उपन्यासमु के संदर्भ में)
प्रपंच	दुनिया (देशों के अर्थ में)
आग्रह	क्रोध (आग्रहमु के अर्थ में)
विधि	किस्मत (भाग्य के अर्थ में)
अभिमान	प्रेम, आदर (अभिमानमु के अर्थ में)

हिंदी		**अंग्रेजी**
सफेद झूठ	-	White lie
रजत जयंती	-	Silver jublie
पाद टिप्पणी	-	Foot note
बैंक खाता	-	Bank account
रेखांकित चेक	-	Crossed cheque
बजट सत्र	-	Budget session
आयनीकरण	-	Ionisation
वोल्टता	-	Voltage
श्वेत पत्र	-	White paper

इन सब उदाहरणों में हम अंग्रेजी के प्रभाव को अनुवाद अथवा समुचित पर्यायों हेतु बनाई गई पारिभाषिक शब्दावली में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। हालाँकि यदि भारतीय भाषाओं के अंदर झाँका जाए तो हमें इनके स्थानीय पर्याय भी मिल जाते हैं। सफेद झूठ के लिए निरा/कोरा असत्य भी कहा जा सकता है परंतु व्यवहार की दृष्टि से अंग्रेजी के प्रभाव वाले शब्द गढ़ लिए गए और अब प्रयोग में आ रहे हैं।

6.4.4 साहित्येतर अनुवाद की दो दिशाएँ और अनुवाद समीक्षा

साहित्येत्तर अनुवाद की दो धाराएँ हमारे सम्मुख हैं। एक ओर सरकारी स्तर पर किए गए कार्यालयीन, बैकिंग, विधि आदि का अनुवाद है तो दूसरी ओर यह गैर सरकारी संगठनों से संबंधित हैं। अखबार, पत्रिकाएँ, टी.वी.

, उद्योग, व्यवसाय जैसे अनेक क्षेत्र भाषाई विविधता का सर्जनात्मक प्रयोग करते हुए भाषा विकास का कार्य कर रहे हैं। पारिभाषिक शब्दावली आयोग, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, नेशनल बुक ट्रस्ट, साहित्य अकादमी, अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा आयोग आदि सरकारी संस्थाएँ तथा बंगाल की वैज्ञानिक शब्दावली समीति, गुजरात विद्यापीठ, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, हिंदुस्तानी प्रचार सभा आदि गैर सरकारी संस्थाएँ विभिन्न कोशों और पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कर चुकी हैं। आधुनिक सूचना क्रांति और वैश्वीकरण के स्तर पर अधिकतर क्षेत्र जन संपर्क के क्षेत्र हैं। इसलिए इनकी भाषा में तकनीकी और गैर तकनीकी भाषिक तत्वों का सही अनुपात में मिश्रण और संतुलन दिखाई देता है। प्रयोजनमूलक भाषा की तथ्य परकता और सामान्य भाषा की सृजनात्मकता दोनों का इस्तेमाल हो रहा है। अनुवाद समीक्षा द्वारा दोनों की तुलना करके संशोधित किया जा सकता है।

उदाहरण

Matter is under consideration = विषय विचाराधीन है।

Please circulate and file = सभी को दिखाकर फाइल कर दीजिए।

Returned in orignal with the remarks that the requisite information has already been sent by this office vide letter no.....dated............

मूल रूप में ही इस टिप्पणी के साथ लौटाया जाता है कि अपेक्षित सूचना पहले ही इस कार्यालय के पत्र सं... ....दिनांक ....द्वारा भेजी जा चुकी है।

साहित्येतर अनुवाद समीक्षा (पाठपरक)

अनुवाद के संदर्भ में पाठपरक शब्द को देखते ही हमें साहित्यिक अनुवाद याद आता है, किंतु समीक्षा जितनी साहित्यिक अनुवाद में उपयोगी है, उससे कहीं ज्यादा साहित्येतर क्षेत्र के अनुवाद में, विशेषकर पाठपरक अनुवाद में लाभकारी है। पाठपरक अनुवाद को देखने की दृष्टि कई दिशाएँ प्रदान करती है। इस का प्रयोग करते हुए यह देखा जाता है कि अपने संदेश, बुनावट में अनूदित पाठ, मूलपाठ के कितने निकट या उससे कितनी दूरी पर है। मूलपाठ को अनूदित पाठ का कितनी सीमा तक संप्रेषित कर पाना सफल हो पाया है। अनूदित पाठ मूलपाठ से कितनी दूरी पर है? इसे निम्न उदाहरण में देख सकते हैं :

1) मूल : He was responsible to reclaim the land.
अनर्थ : वह भूमि का पुनर्दावा करने के लिए जिम्मेदार था।
प्रस्तावित : उस पर भूमि को ठीक करने का उत्तरदायित्व था।

2) मूल : The Court was seized of the matter.
अनर्थ : न्यायालय ने उस मामले को ग्रहण कर लिया।
प्रस्तावित : यह मामला न्यायालय के विचाराधीन था।

3) मूल : Town and country planning Director.
अनर्थ : नगर और देश योजना निदेशक।
प्रस्तावित : नगर और ग्राम योजना निदेशक।

इन सब उदाहरणों में हम अनूदित पाठ और स्रोतपाठ के मध्य 'कथ्य' के संप्रेषण की दूरी और नजदीकी को प्रत्यक्षता देख सकते हैं।

साहित्येतर अनुवाद समीक्षा (प्रक्रियापरक)

अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक की भूमिका बहुआयामी होती है। यह पाठक की, भाषा विश्लेषक की, विषय-विशेषज्ञ की और द्विभाषी की भी हो सकती है। अनुवादक की ये सारी क्षमताएँ, दक्षताएँ और अक्षमताएँ अनुवाद की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। इसीलिए अनुवाद को भाषा व्यापार की सृजनात्मक प्रक्रिया माना गया परंतु सृजनात्मकता साहित्यिक पाठों तक सीमित है। यह प्रक्रिया साहित्येतर पाठों के लिए नहीं; यह धारणा और भ्रम लोगों में प्रचलित हो गया है। इस के अनुसार साहित्येतर पाठों के जो हिंदी अनुवाद मिलते हैं, उनमें सृजनात्मकता

का अभाव दिखाई देता है। उदाहरणार्थ Will you take meals?, क्या आप खाना खाएँगे?/आप खाना खाएँगे क्या?/क्या तुम खाना खाओगे? अनुवाद समीक्षा में इस पक्ष को उभारते हुए हम कई प्रश्नों के उत्तर सहजता से पा सकते है। अगर मूल पाठ से अनुवाद भिन्न है तो क्यों? दोनों पाठों की प्रकृति में जो भेद है, उन के कारण क्या है? संदेश, भाषा की संरचना, शैली और प्रोक्ति की संरचना क्या है? साहित्येतर पाठों में जो भी जटिलता या क्लिष्टता को लेकर चर्चा करते हैं, उस का कारण पारिभाषिक शब्द हैं। पारिभाषिक शब्द निर्माण की नई युक्तियाँ अपनाई गईं और नई भाषा शैली गठित की गई उदाहरण के रूप में विधि एवं कानून की भाषा को लिया जा सकता है :

अभियोग	-	Charge
आदेश	-	Mandate
धारा	-	Section
खंड	-	Clause
समादेश	-	Writ
अध्यादेश	-	Ordinance
निदेश	-	Direction
निर्देश	-	Reference
प्रतिवाद/प्रतिरक्षा/रक्षा	-	Defence

इस का स्वरूप अत्यंत तकनीकी होने के कारण प्रयोग में जटिल एवं दुरूह प्रतीत होता है।

हिंदी में शब्द निर्माण की प्रक्रिया भी अपनाई गई है। यह निर्माण सहज और नियोजित रूप में होता है; जैसे-कालाधन (Black money), काला बाजार (Black Market), काला धंधा (Black deals) यहाँ 'काला' शब्द में 'कल्मश' का भाव जुड़ा है। तत्व (Elements) यौगिक (Compunds) नियोजित रूप में निर्मित किए गए हैं। अब इनके अनुवाद में नियोजन के घटकों का जानना आवश्यक है।

अनुवाद समीक्षा में इन सभी पक्षों की ओर दृष्टि आकृष्ट की जाती है। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली के प्रकारों पर विभिन्न विद्वानों ने चर्चा की। प्रयोग और संदर्भ के आधार पर पूर्ण और अर्ध पारिभाषिक शब्दावली पर विचार करते हैं। अर्थ संप्रेषण पर पारदर्शी और अपारदर्शी पारिभाषिक शब्दों की श्रेणियाँ निर्मित की गई हैं। विधा विशेष के आधार पर भिन्न स्रोतों, परंपरागत और जनबोलियों से लिए गए शब्दों की पारिभाषिकता पर विवेचनात्मक दृष्टि डाली जाती है; जैसे- अणु, परमाणु, स्वनिम, रूपिम, टेंडर, निविदा, लाभांश, धातु, निर्वाचन, पावती,

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली एक ही प्रकार की नहीं है, क्योंकि एक ही अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए यहाँ तत्सम, तद्भव और आगत शब्द का स्वतंत्र प्रयोग और आवश्यकतानुसार संकरित प्रयोग भी हमें मिलता है। शब्दों के बहुस्तरीय रूप अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन के लिए आधार बन सकते हैं।

साक्षरता	लिट्रॅसी
निर्वात	वैक्यूम
प्रभार	चार्ज
सक्षम	कम्पीटेंट
सशर्त	कंडीशनल
घुसपैठ/दलबदलू	इंट्रुडर
Acceptance	सहमति
Sanction	स्वीकृति
Approval	अनुमोदन

बचत स्कीम, इंजीनियरी, संकाय, जिलाधीश, बीमा राशि, बैंक, मुद्रा बाजार।

किरण	-	आशा की/ प्रकाश की
गधा	-	मूर्ख/ जानवर
Tour	-	दौरा/पर्यटन
Confidential	-	क्षमता/धारिता/गोपनीय

इन सभी सभी प्रयोगों में पारिभाषिक शब्दावली में अनेक स्तर तथा प्रक्रियात्मक चरण स्पष्ट दिखाई देते हैं। अतः अनूदित पाठ की समीक्षा में इन्हें आधार बनाकर 'नए पाठ' को संप्रेषणीयता की दृष्टि से क्षमता की कसौटी पर परखा जा सकता है।

6.4.7 संप्रेषण और अनुवाद समीक्षा

अनुवाद संप्रेषण (लक्ष्य) की द्विभाषिक क्रिया है, जिस का लक्ष्य है-भाषा 1 में कही गई बात को भाषा 2 के माध्यम से सहज संप्रेषणीय अभिव्यक्ति में रूपांतरित करना। यही बात गार्गी गुप्त द्वारा दी गई अनुवाद की परिभाषा में बतायी गई है। आधुनिक अनुवाद चिंतन संदेश, संदेश के संप्रेषण और संदेश जिन के लिए है, प्रयोक्ता (उपभोक्ता) इन तीनों को सर्वाधिक महत्व देता है। अनुवाद समीक्षा में अनूदित पाठ की संप्रेषणीयता पर आधारित इस दृष्टि को भी उजागर करने की आवश्यकता है। इसके आधार पर ही अनूदित पाठ की संप्रेषणीयता के अनुपात की जाँच की जा सकती है। यहाँ बाजार समाचार की अभिव्यक्तियों को उदाहरण के रूप में देख सकते हैं।

बाजार गिरना	-	मूल्यों में कमी
बाजार में खामोशी रहना	-	जब कम सौदे हों
बाजार में चहल-पहल रहना	-	अधिक मात्रा में सौदे होना
बाजार संभलना	-	जब मूल्य ह्रास के बाद क्रमशः वृद्धि होने लगे
बाजार टूटना	-	मंदी आना
बाजार में तेजी से उछाल	-	मूल्यों में अनपेक्षित वृद्धि

6.5 मूल्यांकन और समीक्षा में अंतर

इसके पहले हम समालोचना और समीक्षा में अंतर देख चुके है। इसके साथ-साथ कई विद्वान अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन में अंतर नहीं मानते, किंतु इन दोनों में कुछ न कुछ अंतर तो है यहाँ अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन के बीच जो अंतर है उसे प्रस्तुत किया जा रहा है।

अनुवाद समीक्षा के लिए अंग्रेजी में 'Criticism' और 'Review' शब्द प्रयुक्त होते हैं। अनुवाद मूल्यांकन के लिए 'Quality Assessment' और 'Evaluation' शब्द पर्यायवाची है। दोनों अनुवाद प्रक्रिया के बाद ही शुरू होते हैं। अनुवाद समीक्षा अनुवाद सिद्धांत का अनुप्रायोगिक पक्ष है। मूल्यांकन में अनुवाद के कौशल का परीक्षण होता है। इसमें प्रविधि और पद्धति होती है जबकि अनुवाद समीक्षा के अपने सिद्धांत तो हैं किंतु इसकी अपनी पद्धति और प्रविधि अभी तक विकसित नहीं हो पाई है।

अनुवाद मूल्यांकन में मूल्यांकनकर्ता के लिए अनुवाद का अनुभव होना यदि अनिवार्य नहीं है तो अपेक्षित अवश्य है, किंतु अनुवाद समीक्षा से यह अपेक्षा भी नहीं की जाती।

अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन में मूलपाठ की तुलना में अनूदित पाठ के गुण-दोषों का विवेचन होता है, किंतु अनुवाद समीक्षक मूल्यांकन से अधिक आत्मनिष्ठ होती है जबकि मूल्यांकन अधिक वस्तुनिष्ठ होता है।

अनुवाद समीक्षा के लिए समीक्षक का अनुवादक होना अनिवार्य नहीं है परंतु अपरिहार्य भी नहीं। मूल्यांकन के लिए मूल्यांकक को अनुवाद सिद्धांत की जानकारी होनी चाहिए।

अनुवाद समीक्षा के दो प्रकार है वर्णनात्मक और तुलनात्मक जिन पर पहले ही चर्चा हो चुकी हैं। अनुवाद मूल्यांकन के भी दो प्रकार हैं-प्रभाववादी मूल्यांकन और व्यवहारवादी मूल्यांकन।

वर्णनात्मक समीक्षा में मूलपाठ के एक अनुवाद की समीक्षा होती है। प्रभाववादी मूल्यांकन में अनूदित पाठ की प्रभावोत्पादकता आँकी जाती है।

तुलनात्मक समीक्षा में मूलपाठ के न्यूनतम दो अनुवादों की समीक्षा होती है। यह त्रिकोणीय है। यह मूल पाठ से तुलना, दूसरी ओर अनुवादों के बीच तुलना। व्यवहारवादी मूल्यांकन का केन्द्र बिंदु है - पाठक का पाठकों की प्रतिक्रिया के अनुसार गुणवत्ता का परीक्षण किया जाता है।

अनुवाद समीक्षा विषय के अनुसार ही की जाती है। विद्वानों द्वारा मूल्यांकन के लिए चार बिंदु निर्धारित हैं।

1. मूल निष्ठता
2. पठनीयता
3. बोधगम्यता
4. प्रयोजन सिद्धि

साहित्यिक और साहित्येतर समीक्षा के लिए बिंदु समान ही हैं। इन पर पिछली इकाई में विस्तृत चर्चा की जा चुकी है।

अनुवादक की सफलता या विफलता की जाँच समीक्षक करता है। अनुवादक और अनुवाद कार्य की सफलता और विफलता की जाँच के साथ-साथ मूल्यांकनकर्ता प्रयोजन सिद्धि के आधार पर भी मूल्यांकन करता है।

समीक्षा और मूल्यांकन दोनों में मूलपाठ की निकटता देखी जाती है। दोनों में अंतर्संबंध है। इन्हें एक दूसरे के पूरक कह सकते हैं।

6.6 समीक्षा (Criticism) और समीक्षक (Critique)

हमने अपने चर्चाक्रम में देखा कि अंग्रेजी में समीक्षा के लिए 'Review' और 'Criticism' शब्द प्रयोग किया जाता है। किसी नई पुस्तक का परिचय देना है तो 'Review' शब्द का प्रयोग किया जाता है। सीमित रूप में परिचय के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है। मूल पाठ की तुलना में अनूदित पाठ के गुण दोषों का विवेचन करने के लिए 'समीक्षा', 'Criticism' शब्द का प्रयोग करते हैं। विश्लेषण भाषिक संरचना, सामाजिक, सांस्कृतिक शैली और व्याकरणिक स्तर पर होता है। इस का क्षेत्र व्यापक होता है।

प्रमुख अनुवाद चिंतक पीटर न्यूमार्क ने अपनी पुस्तक 'A Text book of Translation' में अनुवाद समीक्षा (Translation Criticism) के बारे में विवेचन किया। इसमें उन्होंने समीक्षक द्वारा समीक्षा करने के लिए मापदंड और समीक्षा योजना के बिंदुओं को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया है। आप पहले पढ़ चुके हैं कि समीक्षक को अनुवादक होने की आवश्यकता नहीं है; परंतु उसे अनुभवी होना चाहिए। भाषा के व्यावहारिक और संरचनात्मक दोनो पक्षों की जानकारी होनी चाहिए। न्यूमार्क द्वारा प्रतिपादित अनुवाद समीक्षा के मापदंड इस प्रकार हैं :

- शुद्धता और संपन्नता दोनों हीअनुवादक और समीक्षक की निष्ठा तथा स्तरीयता के अनुसार होनी चाहिए।
- मूल पाठ से मुक्त होकर बिना किसी रूकावट के अनूदित पाठ में सहजता, स्वाभाविकता, बोधगम्यता और पठनीयता होनी चाहिए।

समीक्षक योजनाबद्ध होकर किसी कृति की समीक्षा करता है तभी वह सही ढंग से उसका मूल्यांकन कर सकता है। न्यूमार्क के अनुसार समीक्षा योजना के बिंदु निम्न प्रकार से हैं :

1) मूल पाठ का उद्देश्य और व्यावहारिक पक्ष का विश्लेषण
2) मूलपाठ के लक्ष्य के अनुसार अनुवादक द्वारा प्रतिपादित आर्थी विश्लेषण साथ में अनुवाद प्रक्रिया तथा अनुवाद की पठनीयता का विश्लेषण।

3) लक्ष्यपाठ के वैशिष्ट्य तथा वर्ग को देखते हुए मूलपाठ से उस का व्यापक तुलनात्मक अध्ययन।

4) अनुवाद मूल्यांकन अनुवादक तथा समीक्षक की पाठ संबंधी मूल-भावना के अनुसार।

5) अनूदित रचना का लक्ष्यभाषा की संस्कृति या अनुशासन में मूल्यांकन।

उपरोक्त बिंदुओं के अलावा अनुवाद समीक्षा के लिए समीक्षक में प्रतिभा और कल्पना के गुण आवश्यक हैं। जिससे वह अनुवाद सिद्धांत के प्रासंगिक पक्षों का अनुवाद के लिए उचित अनुप्रयोग कर सके।

6.7 समीक्षा वैशिष्ट्य

अनुवाद कार्य में समीक्षा के महत्व और अनुवाद की स्तरीयता निर्धारण के आलोक में समीक्षा का अपना विशिष्ट स्थान है। इसके विशिष्ट पक्ष इस प्रकार चिह्नित किए जा सकते हैं :

- अनुवाद शिक्षण में अनुवाद समीक्षा मुख्य बिंदु है।
- अनुवाद कार्य को स्तरीयता प्रदान करने में सहायता मिलती है।
- समीक्षा द्वारा अनुवादक की क्षमता में वृद्धि होती है। समीक्षा उसके ज्ञान क्षेत्र को विस्तृत करती है।
- मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं में अनुवाद क्षमता भी बढ़ती है।
- अनुवादकों के सामने श्रेष्ठ अनुवाद का मानक उपस्थित होता है। गुण-दोष विवेचन के उपरांत सुधरे हुए अनुवाद को अनुवादक आदर्श मान कर अपने कार्य में प्रवृत होता है।
- अनुवाद के प्रति अनुवादक के जो लक्ष्य होते हैं, अनुवाद समीक्षा उन्हें विकल्पों के साथ चुनने में सहायता करती है।
- शैक्षणिक पाठ्यक्रम के स्तर पर तुलनात्मक साहित्य में या साहित्य के अनुवाद या अन्य तकनीकी अनुवादों में अनुवाद समीक्षा एक स्थापित मापदण्ड के रूप में उपयोगी है।
- अनुवाद समीक्षा से विशिष्ट काल खण्ड में और विशिष्ट ज्ञान क्षेत्र में अनुवाद संबंधी विचारों पर प्रकाश डाल सकते हैं।
- अनुवाद समीक्षा द्वारा हमें महत्वपूर्ण लेखकों की रचनाओं तथा महत्वपूर्ण अनुवादकों के अनुवाद कार्य के विवेचन और मूल्यांकन में सहायता मिलती है।
- अनुवाद समीक्षा द्वारा हम मूलभाषा और लक्ष्य भाषा के शब्दकोश, व्याकरण, भाषाशैली एवं पाठ प्रारूप संबंधी समानताओं और असमानाताओं का समीक्षात्मक विवेचन कर सकते हैं।
- अनुवाद समीक्षक लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक निश्चित प्रविधि अपनाता है जिस की प्रकृति वैज्ञानिक होती है।

इस प्रकार अनुवाद समीक्षा के ठोस वैज्ञानिक आधार होने से यह साहित्यिक और सहित्येतर दोनों पाठों को ठीक से परखने को नियामक तय करती है।

6.8 सारांश

इस इकाई में आपने जाना कि अनुवाद समीक्षा अनुवाद पुनरीक्षण और मूल्यांकन से भिन्न है, तथा इसका मूल ध्येय और उपादेय अनुवाद की स्तरीयता बताना है। अनुवाद समीक्षा वास्तव में अनूदित पाठ के गुण-दोषों का विवेचन करना है। अनुवाद समीक्षा तथा समालोचना में काफी समानता है तथापि अनुवाद समीक्षा इसलिए अनुवाद प्रक्रिया में एक विशिष्ट चरण है, क्योंकि इसमें मूलपाठ का विश्लेषण किया जाता है। अनुवाद समीक्षा मूलतः दो प्रकार की होती है जिसमें वर्णनात्मक समीक्षा का विधेय किसी भी अनूदित कृति के एक ही अनुवाद को साहित्यक मूल्यों, संवेदनाओं ताथा भावों की अभिव्यक्ति को मूलपाठ के साथ रखकर स्तरीयता की समीक्षा की जाती है। यह

विश्लेषण और मूल्यांकन आलोचनात्मक एवं संप्रेषण की पूर्णता तथा अनूदित पाठ की भाव-भंगिमाओं के आधार पर किया जाता है, जबकि तुलनात्मक समीक्षा में एक कृति के एक से अधिक अनूदित पाठों का विश्लेषण और मूल्यांकन होता है।

इकाई में चर्चा के दौरान हमने यह भी पाया कि साहित्य-समीक्षा के अतिरिक्त साहित्येतर समीक्षा का भी व्यापक क्षेत्र है, जिसमें पारिभाषिक तकनीकी ज्ञान के पाठ की अपनी विशिष्ट प्रयुक्तियाँ होती हैं तथा इसके अनुवाद में संप्रेषणीयता का तत्व महत्वपूर्ण होता है। समीक्षा के मापदंड और समीक्षा योजना के विचारणीय बिंदुओं पर भी हमने इस इकाई में चर्चा की। संक्षेप में अनुवाद समीक्षा उत्तम एवं मानक अनुवाद की दिशा में एक महत्वपूर्ण उद्यम है।

अनुवाद समीक्षा में अनुवाद मूल्यांकन भी सहभागी रहता है।

6.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद समीक्षा विशिष्ट मूल्यांकन प्रविधि है, समझाइए।
2. अनुवाद समीक्षा के स्वरूप पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
3. वर्णनात्मक अनुवाद समीक्षा व्यापक क्षेत्र क्या है? इसके कालों की विस्तृत विवेचना कीजिए।
4. तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा पर भारतीय अनुवाद संदर्भ में विचार कीजिए।
5. साहित्येतर विषयों के अनुवाद समीक्षा के महत्व पर एक लेख लिखिए।
6. पीटर न्यूमार्क द्वारा प्रतिपादित अनुवाद समीक्षा के बिंदुओं की व्याख्या कीजिए।

6.10 शब्दावली

समीक्षा, समालोचना, मूल्यांकन, अनुप्रयुक्त, वर्णनात्मक, तुलनात्मक, प्रयुक्ति।

6.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- सुरेश कुमार, 2007, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा (सातवाँ संस्करण), नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2012, अनुवाद विज्ञान की भूमिका (द्वितीय संस्करण), नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, अन्नपूर्णा, ओ. प्र. प्रजापति, अनुवाद की नई परंपरा और आयाम, नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।
- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी, (सं), अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- अन्नपूर्णा सी., 1998, अनुवाद समीक्षा- कामायनी, हैदराबाद, चर्ल प्रकाशन।
- New Mark, Peter, A Text Book of Translation, New York : Prentice Hall.